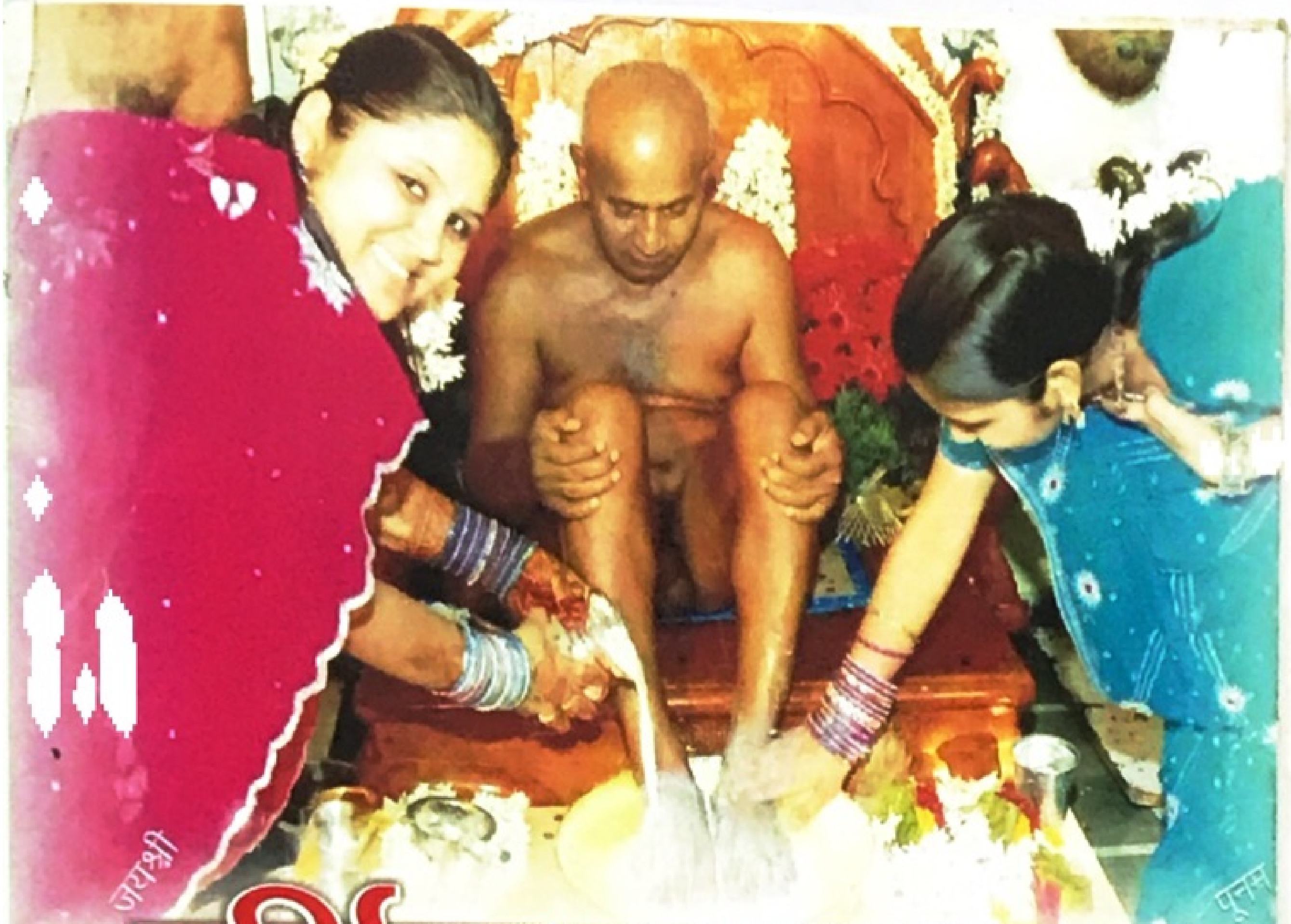

पूर्णिमा का सदाचरण

(बाल कुमारी पूनम (पूर्णिमा) की जिज्ञासाओं को जनोपयोगी जान गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज की कलम से निःसृत श्रावकोपयोगी रचना)

श्री क्षेत्र कुंथुगिरी प्रणेता
गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज

पूर्णिमा का सदाचरण

(बाल कुमारी पूनम (पूर्णिमा) की जिज्ञासाओं को जनोपयेगी जान गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज की कलम से निःसृत श्रावकोपयोगी रचना)

*

लेखक

गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागर

*

संपादक

आर. के जैन (मुंबई)

अध्यक्ष : कुंथुगिरी क्षेत्र

*

द्रव्यदाता

कै. गुणपाल शेटे, कै. गुणपाल रामचंद्र शेटे और कै. भरमू देवप्पा हुकेरी की स्मृति में

श्री शरद गुणपाल शेटे एवं सौ. स्वाती शेटे (सपरिवार)

*

प्रकाशक

बालयोगिनी जयश्री पहाडे

कुंथुगिरी क्षेत्र

मु. पोस्ट : आळते, तालुका : हाथकणंगले,

जिला: कोल्हापुर (महा.)

प्रकाशन : दिसम्बर 2007 मूल्य : 50/- (पचास रूपये मात्र)

प्रतियाँ : 2000 प्रतियाँ : 2000

- लेखक
  गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागर
- संपादक
  आर. के. जैन (मुंबई)
- द्रव्य दाता
  कै. गुणपाल शेटे, कै. गुणपाल रामचंद्र शेटे और कै. भरमू देवप्पा हुकेरी
  की स्मृति में
  श्री शरद गुणपाल शेटे एवं सौ. स्वाती शेटे (सपरिवार)
- प्रकाशक
  बालकुमारी जयश्री पहाडे
  कुंथुगिरि क्षेत्र
  मु. पोस्ट : आळते, तालुका : हाथकणंगले,
  जिला : कोल्हापुर (महा.)
- प्रकाशन : दिसम्बर, २००७
- प्रतियाँ : २०००
- मूल्य : ५०/- (पचास रूपये मात्र)
  अगले प्रकाशन हेतु सहयोग राशि

- मुद्रक
  त्रिमूर्ति ऑफसेट प्रा. लि.
  बाणगंगा थाने के सामने, इन्दौर
  फोन : ०७३१-२७२१५४८, ९४२५३-१६५६७

इस पुस्तक को पढ़ने के पहले

सम्पादकीय

एक दिन मैं गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागरजी महाराज के पास बैठा था कि उदयपुर से कोई सज्जन आये । महाराज जी उन्हें अपनी मातृभाषा मेवाडी में कुछ समझाने लग गये । बीच-बीच में वे हिन्दी भी बोल रहे थे । महाराज की हिन्दी सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि वे झ के स्थान पर ज, ढ के स्थान पर ड और ऐसे ही दूसरे प्रयोग भी कर रहे थे ।मैंने महाराज जी को टोका, महाराज जी बोले पगले, यह हमारी मेवाड़ी मिश्रीत देहाती हिन्दी है । इसे हम अपने बचपन से ही बोलते आ रहे हैं, इसलिये यह भी मेवाडी के साथ-साथ हमारी मातृभाषा है ।पता नहीं क्यों मुझे महाराज जी के मुख से इस देहाती हिन्दी को सुनना मधुर लग रहा था, इसलिये मैंने निवेदन किया कि भगवन् आपने खड़ी बोली में तो अनेकों ग्रंथों की रचना की है, एक रचना इस हिन्दी में भी यदि संभव हो जाये, तो जैसे मेवाड़ी भाषा को भाषा के इतिहास में स्थायित्व प्राप्त है, वैसे ही इस देहाती हिन्दी को भी इतिहास में स्थापित होने के लिये आधार मिल जायेगा ।

शायद महाराजी को मेरी बात उनकी द्वितीयमातृभाषा के संदर्भ में उपयुक्त लगी व निमित्त बनी बालयोगिनी पूनम । उसके पास जिज्ञासाओं के ढ़ेर थे । महाराज जी ने अपने वक्तव्य का जहाँ से प्रारंभ किया है, वे जिज्ञासायें उसीकी हैं और उन्हीं जिज्ञासाओं के दिये गये उत्तर/समाधान इस पुस्तक में संकलित हैं । इस संकलन को आचार्य भगवंत ने बड़ी करुणा कर हम श्रावकों के लिये कागज पर उसी देहाती हिन्दी में उतारा है ।

वैसे तो मैं भाषाविद् नहीं हूँ, फिर भी देहाती हिन्दी और खड़ी बोली के जो कुछ अंतर मेरी पकड़ में आये वे इस प्रकार थे :

इस भाषा में कि को की, ढ़, ढ और ड़ को ड, झ को ज, त को द, ऐ की मात्रा के स्थान पर ए की मात्रा और बड़ी ई की मात्रा के स्थान पर

छोटी इ की मात्रा का प्रयोग भाषा के प्रवाह के अनुसार किया जाता है, सर्वत्र नहीं । कहाँ किया जाता है और कहाँ नहीं, यह प्रश्न भाषाविदों के लिये खोज का विषय है । चूँकि इसका कोई लिखित व्याकरण या कोश नहीं है, इसलिये अभ्यासी इसे परंपरा से बोलते हैं ।

इसी प्रकार सकता को शक्ता, ऊपर को उपर, बंद को बंध आदि प्रयोग भी इस पुस्तक में देखने को मिले ।

चूँकि आचार्य भगवंत पर संस्कार हिन्दी खड़ी बोली के भी हैं, इसलिये इस खड़ी बोली की छाप भी इस पुस्तक में स्थान-स्थान पर देखने को मिलती है । हम कह सकते हैं कि यह पुस्तक हिन्दी खड़ी बोली व देहाती बोली का सम्मिश्रण है, जिसे पढ़ते हुए विषय को ग्राह्य करने में किसी भी प्रकार की बाधा अनुभव में नहीं आती, अपितु अनुभव यही आता है कि हम ऐसी भाषा को पढ़ रहे हैं, जिससे कि हम परिचित हैं । प्रयोग नया, किंतु सफलतम् है ।

इसी प्रकार इसमें प्ररूपित विषय भी असमंजस उत्पन्न करने वाले हैं । आचार्य भगवंत बाल ब्रह्मचारी, गृहस्थ धर्म का उन्हें किंचित् भी अनुभव नहीं । इसीके साथ विशेषता यह कि जो विषय इसमें प्ररूपित किया गया है, वह किसी भी अन्य श्रावकाचार में देखने को नहीं मिला, किंतु पढ़ते हुए स्पष्ट अनुभव में आता है कि यह तो उन्हीं श्रावकाचारों का ही अनुक्त भेद है ।

अर्थात् न तो आचार्य महाराज को घर-गृहस्थी का अनुभव और न ही श्रावकाचारों में इस विषय को पढ़ा, जैसे पति-पत्नी संबंध कि पति पत्नी के प्रति क्या व्यवहार करे और पत्नी पति के साथ कैसा व्यवहार करे, ऐसे ही माता-पिता-पुत्र संबंध व अन्य विषय । अतः यहाँ प्रश्न है कि गृहस्थ धर्म व उसकी नियमावली का बोध आचार्य भगवंत के पास आया, तो आया कहाँ से ?

मुझे तो प्रतीति में आ रहा है कि जिस आदर्श जीवन का कथन इस पुस्तक में किया गया है, उसे आपने अपने पूर्व भव में जिया है और अप्रतिपात रूप से इस भव में साथ चला आया । जैसा कि आप लिखते

हैं कि इस आदर्श जीवन का फल मोक्ष पुरुषार्थ के योग्य पात्रता का उत्पन्न होना है, तो निश्चित ही इस भीषण कलिकाल में इस मोक्ष पुरुषार्थी पद में आपका स्थित होना उसीका प्रतिफल है, यह साक्षात अनुभव में आता है, वह भी आपकी निकट भव्यता के प्रति निःशंक करते हुए। आपको प्राप्त फल हमें भी आश्वस्त करता है कि यथार्थ में यदि हम परंपरा मोक्ष का फल चाहते हैं, तो हमें भी जिस आदर्श जीवन का चित्रण आपने इस पुस्तक में किया है उसी जीवन को हमें भी जीना होगा। यदि इस आदर्श जीवन को हमने जी लिया, तो निश्चित ही हमारी भी निकट भव्यता में शंका को कोई स्थान शेष नहीं रह जायेगा। आपके चरणों में कोटि -कोटि नमन।

- आर. के. जैन (मुंबई)
अध्यक्ष : कुंथुगिरि क्षेत्र

साधु की परिभाषा

मुष्णाति दुरितं दूरात्परं पुष्णाति योग्यताम्।
भूयः श्रेयोऽनुबध्नाति प्रायः साधुसमागमः॥

अर्थ : साधुओं का समागम पाप को दूर से ही नष्ट कर देता है, योग्यता को पुष्ट करता है और हित का संवर्द्धन करता है।

-आदि पुराण 9/161

स्वदुःखे निर्घृणारम्भाः परदुःखेषु दुःखिताः।
निर्व्यपेक्षं परार्थेषु बद्धकक्ष्या मुमुक्षवः॥

अर्थ : मोक्ष के अभिलाषी साधुजन अपने दुःख को दूर करने का कोई प्रयत्न नहीं करते, किंतु दूसरों का दुःख दूर करने का प्रयत्न करने के लिये सदा तत्पर रहते हैं और दूसरों का कार्य सिद्ध करने के लिये निःस्वार्थ भाव से कटिबद्ध रहते हैं।

-आदि पुराण 9/164

1. योग्य क्रिया

1. प्रातःकाल गोसर्ग काल याने 6 बजे नीद्रा से उठो।
2. नीद्रा से उठते ही बीस्तर पर ही बैठकर 9 बार णमोकार महामंत्र का जाप्य करें और बिस्तर से नीचे उतरें।
3. सोने वाले बिस्तर को समेट कर रखें।
4. उसके बाद सारीरीक मल विसर्जन करने के बाद स्नानादिक प्रासुक जल से करें और शुद्ध वस्त्र पहनें।
5. शुद्ध वस्त्र पहनकर अष्टद्रव्य (अर्चना का सामान) लेकर जिन मंदिर को जावे, मंदीर की तीन प्रदक्षिणा देकर भगवान का दर्शन करें, दर्शन करते समय भाव शुद्ध रखें, क्रोध अहंकार, कपट, लोभ, माया, झुट, संसारीक तेरा मेरादि पाप भावों को छोड़कर भगवान का दर्शन करें।

   उदक चंदन आदि बोलकर मूल नायक भगवान को अर्घ चडावे, भगवान को पंचाङ्ग नमस्कार करें।
6. फिर बैठकर णमोकार महामंत्र की एक माला का जाप्य करें, गुरूमंत्र का 27 बार जाप्य करें।
7. फिर भगवान का श्रद्धा भक्ती पूर्वक, स्तोत्र, चालिसादि पडे। टाइम हो तो पूजा भी कर शक्ते हैं, नहीं तो स्तोत्र पडे। कम से कम देव शास्त्र गुरू को तो अवश्य अर्घ चडावें।
8. अगर आचार्य गुरू मंदीर जी में हो तो उनका दर्शन करें व अर्घ चडावें, मुनी को नमोस्तु, आर्यिका माताजी को वंदामी, क्षुल्लक जी व क्षुल्लिका माताजी को इच्छामी करें और गवासन से नमस्कार करें।
9. अगर आचार्यादिक का प्रवचन चालु हो तो प्रवचन अवश्य सुनें।

10. नहीं तो कुछ क्षण शांति से बैठकर कुछ क्षण शास्त्र का स्वाध्याय करें, शास्त्र पडें, कीन्तु प्रथम आदिपुराणादि पडें, कीसी महापुरूष का जीवन चरित्र पडें ।

11. पुनः भगवान को नमस्कार कर मंदीर जी में विराजित शासन देवता पद्मावति माता जी को अर्घ चडाकर नमस्कार करे व स्तोत्र पडें ।

12. मंदीर में प्रवेश करते समय, निसही निसही निसही बोले, दर्शन कर मंदिर से वापस निकलते समय आसही, आसही, आसही बोलकर अपने घर की तरफ वापस आ जावे ।

शासन देवता और....

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत् परिषद के महामंत्री आदरणीय डॉ. सुरेन्द्र भारती, बुरहानपुर, पं. भरत काला, मुंबई, द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के प्रत्युत्तर में विद्वत् परिषद की ओर से एक स्पष्टीकरण समस्त समाचार पत्रों को प्रेषित करते हुए आम्नाय एक ही है, शीर्षक्र से लिखते हैं कि :-

वास्तविकता यह है कि हमारी दोनों शास्त्री व विद्वत्परिषदें देवताओं के अस्तित्व को स्वीकार करती हैं । परमपूज्य मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज व उनके गुरुवर्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज भी अनेक बार सार्वजनिक रूप से बतला चुके हैं कि वे शासन देवताओं के अस्तित्व को मानते हैं । ऐसा कोई जैन नहीं हो सकता जो इन्हें न माने, यहाँ तक कि तथाकथित कानजी पंथी भी इन्हें मानते हैं ।

अर्थात् यदि विद्वत् परिषद के आदरणीय महामंत्री महोदय को हम प्रमाण मानें, जो कि व्यक्तिगत नहीं, अपितु शास्त्री व विद्वत् परिषद के समस्त सदस्यों के प्रतिनिधि बनकर सार्वजनिक वक्तव्य दे रहे हैं, तो न सिर्फ मुनिपुंगव सुधासागरजी महाराज की अपेक्षा से, अपितु आचार्य श्री विद्यासागरजी की भी अपेक्षा से शासन देवता मिथ्या देवता नहीं हैं ।

(दिग्विजय,मई से जून संयुक्तांक, पृष्ठ 105 से साभार)

गृहस्थी के घर का व्यवहार

गृहस्थी के घर का व्यवहार

1. घर गृहस्थी को नीद्रा से उठते ही अपने इष्ट देवता का स्मरण करना चाहिये, फिर परस्पर जयजिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र करना चाहिये।
2. अपने से बड़े माता-पिता व सास ससुर आदि के चरण स्पर्श कर नमस्कार करें।
3. गुरूजनों के आशिर्वाद से पुरे दिन के कार्यक्रम मंगलपूर्वक होते हैं इसलिये गुरूजनों का आशिर्वाद प्राप्त करें।
4. गुरूजन याने अपने से बड़े माता पिता सास, ससुर, भाई भावजादि।
5. गुरूजनों को भी चाहिये की अपने से छोटे जनों को मंगल भावना पूर्वक आशिर्वाद देवे, और उन के लिये मंगल कामना करें, उनका जीवन मंगलमय हो।
6. गृहस्थी को चाहिये की वह कभी भी क्रोध अहंकार (घमंड) मायाचारी (कपट) लोभ इर्ष्या द्वेष, दुसरे का बुरा हो एसी भावना न करें, न कीसी का बुरा हो एसा सोचे, बुराइ का फल बुरा होता है, कभी अच्छा नहीं होता।
7. गृहस्थ दशा में रहते हुवे, एक दुसरे के प्रति अच्छा ही व्यवहार करें, मात्र एक दुसरे के प्रति शांति का व्यवहार करें, जिससे हमारे जीवन में भी शांति रहे, जो दुसरे को शांति से जीने देता है उसके जीवन में भी शांति रहती है।
8. गृहस्थी को परिवार चलाने के लिये समता, गंभीरता, क्षमा, सहनशीलता की परम आवश्यकता है क्योंकि घर में सब प्रकार के लोग रहते हैं, अलग-अलग स्वभाव के लोग रहते हैं।

9. जो घर का मुखिया होता है वो सबको निभाकर चले, सबको साथ-साथ लेकर चले जिससे घर की एकता न टुटे, न जगडे आदि हों।

10. गृहस्थी को घर चलाने के लिये तेरा-मेरा का त्याग करना चाहिये, तेरा मेरा करने से घर में फुट पड़ती है व राग द्वेष बड़ते हैं।

11. शांतिमय जीवन स्वर्ग है व अशांत व आकुलता से सहित जीवन नर्क है।

12. घर के बड़े लोग अपने से छोटे लोगों का पूर्ण ध्यान रखें, उनके खाने पीने खर्चापाणी, दवाइ आदि का ध्यान रखें व उनकी व्यवस्था रखें।

13. गृहस्थीयों के घर में जो गुरूजनों से छोटे हैं, वे अपने से जो बड़े हैं उनका पूर्ण विनय रखें, उनको जबाव न देवें, कुछ बोल रहे हैं तो शांति से सुने, योग्य बात हो तो जवाब देवे, नहीं तो चुप रहें।

14. एक दुसरे का विनय रखने से परस्पर प्रेम बड़ता है, छोटे बड़ों का विनय करें, बड़े अपनी मान मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखें, और अपने से छोटो का भी विनय करें।

15. छोटे बड़ों की मान मर्यादा रखें, बड़े छोटों की मान मर्यादा रखें। घर की मान मर्यादा अगर परस्पर की टुट जाती है तो वह गृहस्थी का घर नरक बन जाता है उस घर से ऋद्धि-सिद्धि लक्ष्मी चली जाती है, दरीद्रता का वास हो जाता है।

16. गृहस्थी को एक दुसरे के लिये गाली गलोज, गंधी भाषा कभी नहीं बोलना चाहिये, ओछी भाषा का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये, एक दुसरे के प्रति अपशब्दों का प्रयोग न करें, मर्मभेदी वचन नहीं बोलना चाहिये।

17. गृहस्थीको चाहिये की अपने घर में सुन्दर वातावरण बना कर रखना चाहिये, पवित्रता बना कर रखना चाहिये, घर की सफाई रखनी चाहिये।

18. गृहस्थों के घर में अगर गंधगी रहती है तो उस घर में सदैव रोग,

शोक, आधि व्याधी पीड़ा रहती है।

19. गृहस्थों के घर में गंधगी कभी नहीं रहना चाहिये, नहीं तो गंदगी के कारण घर में रहने वाले देवता का निवास चला जाता है।

20. गृहस्थी के घर में नियमानुसार देव-चैत्यालय अवश्य होना चाहिये, अगर मूर्ति रखना संभव नहीं हो तो कम से कम अपने इष्टदेवों के फोटो तो अवश्य लगाना चाहिये।

21. गृहस्थी के घर में क्रूर देवों के फोटो कभी नहीं होना चाहिये और महाभारतादि युद्ध के फोटो भी नहीं होने चाहिये।

22. गृहस्थी के घर में हींसक व मांसाहारी पशु पक्षीओं के फोटो भी न हों और उनके स्टेचु भी न हो । हींसक व मांसाहारी पशु पक्षिओं को भी न पाले।

23. गृहस्थी के घर में जो भी मुखीया घर का हो उसे हमारे इष्ट देव कौन है अवश्य बतावें। और उनका विनय भक्ती करना बतावें।

24. गृहस्थी को चाहिये की प्रथम धर्म कार्य करके अपने व्यापार की तरफ अवश्य ध्यान दें, व्यवसाय करें, नौकरी भी कर सकते हैं ताकी घर खर्च चले, दान, पुण्य, परउपकार कर सकते हैं।

25. गृहस्थी की अर्थ (धन) व्यवस्था अच्छी होनी चाहिये, किन्तु अन्याय अनिती से धन न कमावें।

26. संतोष से परम सुख मिलता, इसलिये धन कमाते समय संतोष रखना परम आवश्यक है, अति लोभ दुःख का कारण है।

27. गृहस्थी पापी से नहीं, पाप से डरे, जीवन में कभी पाप न करें, पाप का फल अवश्य भोगना पड़ता है, पाप करने से डरें क्योंकि इस भव में भी पाप का फल भोगना पड़ता है और आगे के भवों में भी पाप का फल भोगना पड़ता है इसलिये धन कमाने में कभी पाप न करें।

28. मनुष्य के साथ मात्र पुण्य व पाप जाता है, धन नहीं, धन न साथ लेकर आता है न साथ लेकर जाता है, मरने के बाद सब यहीं छुट

जाता है।

29. इसलिये धन का लोभ कभी नहीं करें, धन का नाश अवश्यंभावी है।

30. संसार में सब जगह धन की ही लड़ाई है, इस धन के लोभ में मानव कौन कौन से पाप नहीं करता, जो धन का लोभी होता है उसको मात्र पैसा ही पैसा दीखता है और कोई भी नहीं, धन के सामने न माँ, न बाप, न भाइ, न बंधु, न बहन, न और कोई रीस्ता।

31. मनुष्य धन के लिये माँ, बहन, बेटी, भाइ, पिता को भी मार डालता है।

32. इसलिये मानव को जितना आवश्यक है उतना ही धन कमाना चाहिये, जादा नहीं।

33. गृहस्थी को चाहिये की धन प्राप्त करने के बाद रूपये का पाँच परसेंट अवश्य दान धर्म में लगावे पर उपकार में लगावें, साधु संतों को दान देवे चाहे भोजन दान, औषध दान, ज्ञानदान, (शास्त्र दान) या अभय दान आदि।

34. नहीं तो धन का नाश अवश्य होता है इसलिये धन का लोभ कभी नहीं करें।

35. जिसके पास ज्यादा धन होता है और अगर उसने दान पुण्य में उस धन को नहीं लगाया तो वह धन उस धनवान को नरक में ले जाता है।

36. गृहस्थी को धन के साथ-साथ धर्म का भी ध्यान रखना चाहिये।

37. मनुष्य के जीवन में अंत में तो धर्म ही साथ आता है, बाकी सब यहाँ ही पडा रह जाता है।

38. गृहस्थी को स्वयं भी धर्म का पालन करना चाहिये और अपने आश्रित पुत्र, पुत्रि, भाई बंधु को भी धर्म पालन करने में लगावें, सब परिवार को भी धर्म के प्रति उत्साहित करें, धर्म में लगावें।

39. धनवान बड़ा नहीं होता धर्मात्मा बड़ा होता है।

40. गृहस्थी को अपने घर में सब को खाने के लिये शुद्ध भोजन ही बनावें, अभक्ष, मांस, शराब, अण्डे, प्याज, लहसुनादि न खावे न खीलावे।

41. गृहस्थी को पानी छान कर ही उपयोग में लाना चाहिये चाहे पीने का पानी हो चाहे किसी भी काम में लाने वाला पानी हो, अनछना पानी कभी भी उपयोग में न लावें।

42. गृहस्थी को कभी भी रात्रि भोजन नहीं करना चाहिये रात्रि भोजन करने से सरीर में रोग बडता है और जीव हिंसा होने से महापाप लगता है।

43. रात्रि में भोजन पकाने से अग्नि में अनेक जीव पड कर मर जाते हैं, भोजन में भी जीव पड़ कर मर जाते हैं इसलिये जीव हिंसा होती है।

44. अनेक प्रकार के दो इन्द्री, तीन इन्द्री, चार इन्द्री, पंचेन्द्रिय जीव भोजन में पड कर मर जाते हैं, भोजन के अन्दर पडे हुवे जीव रात्रि भोजन करने वाले के पेट में चले जाते हैं और रात्रि भोजन करने वाले को कोई भी रोग हो शक्ता है।

45. जुं अगर पेट में गई तो जलोदर रोग होता है, मक्खी अगर पेट में गई तो उल्टी रोग होता है, मकड़ी पेट में गई तो कुष्ट रोग होता है, सर्प, बिच्छु, छीपकली का भोजन से संपर्क हो गया तो प्राणघात हो जाता है।

46. इसलिये रात्रि भोजन करने वाले को सभी धर्मकर्मो का फल नहीं मिलता है, रात्रि में भोजन मांस के बराबर, पानी खुन के बराबर होता है।

47. गृहस्थी सूर्योदय के एक घंटे बाद भोजन व पानी खावे पीवे और सूर्य अस्त के एक घंटे पहले भोजन कर लेवे, उसके पहले या बाद में न खावे न पीवे।

48. गृहस्थी को कम से कम रात्रि में अन्न वस्तु का तो त्याग करना ही चाहिये।

49. गृहस्थ श्रावक के लक्षण, रात्रि भोजन नहीं करना, पानी छान

कर पीना, और देव दर्शन प्रतिदिन करना ।

50. गृहस्थी को दिन में कभी नहीं सोना चाहिये, दिन में सोने से सरीर में अनेक रोग बडते हैं, वात पित कफ कुपित हो जाते हैं और नाना प्रकार के रोग शरीर में हो जाते हैं ।

51. अति बाल, अति वृद्ध, रोग से पीडीत, परिश्रम किया हो और गरमी का दिन हो तो दिन में सो शक्ता है, अन्य ऋतुओं में नहीं सोना ।

52. गृहस्थी ऐसे तत्व अपने घर में कभी नहीं रखे जिससे घर परिवार की एकता टुट जाये, परस्पर मन मुटाव हो जाये, लडाई जगडे बड जाये, घर की शांति भंग हो जाये ।

53. गृहस्थी को अपने परिवार के बच्चे व बच्चीओं की अच्छी पडाई करवाना चाहिये ताकि वो आगे जाकर अपने पांव पर खडे हो जाये, धंधा, व्यापार, नौकरी आदि कर सके ।

54. गृहस्थी को अपनी आमदनी पर पुरा ध्यान देना चाहिये और जीतनी आवक है उसीके अनुसार घर खर्च करना चाहिये ।

55. जो गृहस्थ आवक के अनुसार घर खर्च नहीं करता, वह परिवार दरिद्री हो जाता है, भुखे मरने की बारी आ जाती है ।

56. गृहस्थ को बाहरी दीखावा कभी नहीं करना चाहिये, अपनी हेसियत अवश्य देखना चाहिये ।

57. गृहस्थ को चाहिये की अपने घर में शादी लायक अगर कोई बहन, बेटी, भतीजी आदि हो तो अपनी जाती (याने जैन) में योग्य वर व घर देखकर उन की शादी कर देवे ।

58. अगर स्त्री पर्यायी लडकी आदि हो तो, उसके रजस्वला होने के बाद शादी लायक समजी जाती है । धर्मशास्त्र में तो यहां तक लिखा है की लड़की पिता के घर में या भाई के घर में रजस्वला न हो, वह अपने पति के घर में रजस्वला हो ।

59. तो भी वर्तमान समयानुसार अठारह वर्ष की लड़की अगर हो गई तो उसकी शीघ्र शादी कर देना चाहिये, लड़की को ज्यादा उमर

वाली न करें।

60. अठारह वर्ष की उमर के बाद लड़का व लड़की शादी के लायक हो जाते हैं इसलिये अवश्य उनकी शादी कर देवें।

61. लड़का व लड़की सुखी रहे इस का ध्यान अवश्य रखें।

62. अपने घर परिवार की लड़की दुसरे परिवार में जाकर नाम कमांवे एसी ही उस लड़की को शीक्षा देवें, यश कमांवे, प्रसंसित हो।

63. अयोग्य शिक्षा वालीं लड़की दोनो परिवार को बदनाम कर देती है।

64. स्त्री पर्याय में रहने वाली महिला को मर्यादा में रहना मर्यादा में बोलना, उसका मर्यादित चाल चलन होना चाहिये।

65. गृहस्थ महिला को शादी के पहले ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिये, शादी के बाद एक पति व्रत का पालन करना पति के अभाव में पुनः जीवन भर ब्रह्मचर्य पालन करना, यही योग्य व सुशील महिला का कर्त्तव्य है।

66. गृहस्थ जीवन में रहने वाली महिला को पतिव्रता रहना परम आवश्यक है, पुरूष को भी चाहिये कि वह भी स्वदार संतोष व्रत का पालन करें, परस्त्री सेवन करने वाले पुरूष की भी दुर्गति होती है नरक गामी होता है, और स्त्री भी अगर पर पुरूषगामी है तो वह भी नरक गामी होती है, महादुःख भोगती है।

67. नारी का शील ही भुषण है, शील ही सौन्दर्य है, शील ही सोना चांदी व जवारात के गहने है वही उसकी सम्पदा है वही उसका धन है।

68. गृहस्थ महिला के पास लाखों रूपये की सम्पदा अगर है और शीलव्रत नहीं है तो सब व्यर्थ है, शीलरहित नारी जगत में अपमानित होकर दुःख भोगती है। पापीनी कहलाती है।

69. महिलाओं को ऐसे ही वस्त्र व आभुषण पहनना चाहिये, जिससे हमारे शीलव्रत की रक्षा हो शरीर के अंगोपांग दिखे, वैसे कपड़े

कभी नहीं पहनना चाहिये।

70. महिलाओं का शरीर पूर्ण ढका होना चाहिये खुला हुआ नहीं, महिलाओं को अपने आंगोपांग कभी दुसरे को नही दिखाना चाहिये, लाज ही बड़ा धर्म है, निर्लजता नहीं होना।

71. गृहस्थमहिलाओं को रजस्वला होने के बाद तीन दिन एकान्त में बैठे, रसोई में नहीं जावे, छुवाछुत न करें, पलंग पर न सोवे, भोजन न बनावे, पूर्ण शुद्धी रखें, अशुद्धता न हो, ब्रह्मचर्य से रहे, ब्रह्मचर्य का तीन दिन पूर्णरूप से पालन करना चाहिये।

72. गृहस्थ महिला रजस्वला होने के बाद, प्रथम दिन चांडलीनी के समान, दुसरे दिन ब्रह्मघातिनी के बराबर, तीसरे दिन रजपूर्ति याने समाप्ति होती है, चोथे दिन शुद्ध होती है।

73. गृहस्थ महिला रजस्वला (एम.सी.) होने के बाद चौथे दिन शुद्ध होती है, चौथे दिन स्नान के बाद जिन मंदिर के दर्शन को जावे, किन्तु दुर से जिन दर्शन करे, मंदिर की कोई भी वस्तु स्पर्श न करे और वापस घर को आ जावे।

74. गृहस्थ महिला चतुर्थ स्नान के बाद घर परिवार वाले के लिये भोजनादि बना शक्ती है, किन्तु साधुओं के लिये न भोजन बनावे, न आहार देवे, पांचवे दिन साधु को आहार देना व जिन पूजा कर शक्ती है, अगर अशुद्धि है तो अशुद्ध अवस्था में जिनाभिषेक व पूजा न करें, न साधुओं को आहार देवें।

75. गृहस्थ महीला को अगर पांचवे दिन के बाद भी अगर रक्त श्राव होता रहता है तो आचार्यो ने रोग जनीत रक्त श्राव माना है।

76. गृहस्थ महिला को पांचवे दिन के बाद भी अगर रक्त श्राव होता है तो चार दिन पालने की कोई आवश्यकता नहीं मात्र स्नान करने से शुद्धि हो जाती है।

77. गृहस्थ महिला अगर अठारह दिनों में वापस रजस्वला हो जाती है तो स्नान मात्र शुद्धि। अठारह दिनों के बाद रजस्वला हो जाये तो दो दिन पालन करे। पचीस दिन से लगाकर तीस दिन के

भीतर अगर रजस्वला हो तो चार दिन पालन करे।

78. गृहस्थ महिला अगर पचास वर्ष की उमर के बाद भी रजस्वला होती है तो चार दिन पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं, स्नान मात्र से शुद्धि हो जाती है।

79. गृहस्थ महिला का रजस्त्राव पेतालिस वर्ष से पचास वर्ष तक में समाप्त होने का समय है, या तो जादा रजस्त्राव होकर बंद हो जाता है या थोड़ा थोड़ा कम होते होते पूर्ण रजस्त्राव बंध हो जाता है।

80. गृहस्थ महिला के अंदर पंद्रा वर्ष की आयु से लगा कर साठ वर्ष की आयु तक संतान उत्पन्न करने की शक्ती रहती है इसलिये महिलाओं को पूर्ण सावधान रहना चाहिये।

81. गृहस्थ घर में अगर किसी स्व परिवार के व्यक्ति का मरण हो गया हो तो बारह दिन का सुतक लगता है, माता-पिता-भाई-पुत्रादि का मरण हो गया तो बारह दिन पालन करें, बारह दिन पूजाभिषेक, आहारदान न करें, तीन दिन के बाद मंदीर में देवदर्शन के लिये जा सकते हैं, किन्तु मंदीर की कोई भी वस्तु को स्पर्श न करें।

82. गृहस्थ घर में अगर लड़का लड़की का जन्म हुआ हो तो दश दिन का सुतक पाले, ग्यारहवे दिन उस घर के लोगों की शुद्धि मानी है।

83. गृहस्थ के घर में सुतक या पातक तीसरी पीडि तक दश व बारह दिन का लगता है, चौथी पीडी से छह दिन, आगे जैसे जैसे पीडीयां बडती है सुतक या पातक का एक-एक दिन कम होता जाता है।

84. गृहस्थ के घर में अगर कोई गाय भेंस या अन्य पशु है या पक्षी है तो उनके खाने पीने का पूर्ण ध्यान रखें, न वह भूखें रहे न प्यासे रहे, न ठंडी भरे न गरमी लगे न बरसात खावे नहीं तो वह पशु रोगी होकर मर जावेगा, पाप पालन करने वालों को लगेगा।

85. गृहस्थ के घर में अगर नौकर चाकर दास, दासी हो तो उनका भी पूर्ण ध्यान रखें। उनके उपर भी दया करते हुवे उनसे काम

लें, उनके उपर अन्याय न करें।

86. गृहस्थ को अपने घर में रसोइ आदि के लिये काम आने वाले नौकर-चाकर, दास दासी आदि अच्छे कुल जाति वालों को ही रखना चाहिये। मांसाहारी नीच कुली, शुद्रादि लोगों को न रखें।

87. गृहस्थ अपने परिवार के लोगों को नीच संगती से बचावे, शराबी, मांसाहारी, व जुवारी आदि खोटी आदत के लोग हैं उनकी संगती से बचावे। नीच संगती से मानव बिगड शक्ता है, परिवार का एक भी व्यक्ति कुसंगती में अगर पड गया तो पुरा घर बरबाद हो जाता है।

88. गृहस्थ अपने घर में काम आने वाले बरतन वगेरे सोने-चांदी तांबा पीतलादि अच्छी धातुओं के बरतन रखें, कडाइ वगेरे लोहे की रख शक्ते हैं।

89. इलमोनीयम के बरतन में न खाना पकावे न खावें, इलमोनियम के बरतन में खाना पकाने से वह खाने से ग्रहस्थी का शरीर रोगी हो शक्ता है शरीर में कोई भी रोग हो सक्ता है पायरिया आदि।

90. गृहस्थ लेटरिंग जाकर अच्छी तरह से अपने अंगों की शुद्धि करें, हाथ कम से कम तीन बार मिट्टी ले कर धोवे, पैसाब जाने के बाद भी पानी से अपने अंग को धोवे, साथ में हाथ भी धोवें।

91. गृहस्थ के कपडे आदि भी टट्टी पैसाब के नहीं होना चाहिये, सारीरिक अशुद्धि के कारण अनेक अनिष्ट हो सकते हैं।

92. गृहस्थ चलते समय चौराहे पर या तीन रास्ते पर, रास्ते में पडे हुवे टोटके कर पडे हुवे नीबु आदि पर पांव न रखें, न उन पदार्थो को उलंघ कर जावे, उनसे बच कर चले, नहीं बचने पर अनीष्ट हो शक्ता है।

93. गृहस्थी को अपने घर में नित्य ही ताजा भोजन बनाकर ही खाना चाहिये, दो दिन, तीन दिन या कल का बासी खाना कभी नहीं खाना चाहिये, बासी खाने से बुद्धि खराब हो जाती है व सारीरिक

रोग बड़ जाता है ।

94. गृहस्थी पापड, मंगोडी, आचार वगेरे ताजा व शुद्ध बना कर खावे, मर्यादित खावे, कइ दिनों के सडे गले पदार्थ नहीं खावे, फुलन आदि से दुषित व दुर्गंधित पदार्थ खाने में उपयोग न करे ।

95. गृहस्थी आटा, मसाले आदि सब खाने के पदार्थ अच्छी तरह से देख, कंकर, जीवादि से रहित कर कुटे, पीसे, छाने और साफ सुतरी जगह पर बंध डबे में रखे ताकि उसमें जीव-जन्तु नहीं चडे ।

96. गृहस्थी को चाहिये की ठंडी के दिनों में सात दिनों का पीसा हुआ आटा व मसाला खावे, गरमी के दिनों में पांच दिनों का व बरसात के दिनों में तीन दिन तक का ही मसाला कुटा हुवा, आटा पीसा हुआ खावे ।

97. गृहस्थी को चाहिये की बरसात के दिनों में गेंहु, चना, उड़द, मुंगादि साबुत धान्य जादा संग्रह करके न रखे, नहीं तो उसमें कीडे आदि जीव पड़ जाते हैं, उनके मरने पर जीव हिंसा से पाप लगेगा, जीतना जरूरत है उतना ही रखें ।

98. गृहस्थी अपने घर में खाने के लिये गुड सक्करादि अच्छी तरह से बंध डीबे में बंध कर रखे ताकि उस में चीटी मकोडे आदि न चडे, नहीं तो अवश्य हिंसा होगी ।

99. गृहस्थी अपने घर में प्रतिदिन शुद्ध भोजन ही बनावे ताकी उस भोजन को साधु संतों को दे सके, आहार दान दे सके ।

100. गृहस्थी स्वयं अपने लिये भोजन बनावे और उसमें से ही साधु संतों को आहार दान देवे और महा पुण्य कमावे, किन्तु अपने घर में शुद्ध भोजन बनाना चाहिये ।

101. गृहस्थी को प्रतिदिन अपने घर में शुद्ध भोजन बनवाकर ही भोजन करना चाहिये, परिवार में भी सब को शुद्ध भोजन ही करना चाहिये ।

102. गृहस्थी को कभी भी होटलादि में बने हुवे भोजनादिक पदार्थ नहीं खाना चाहिये, बाहर के पदार्थ सब अशुद्ध ही होते हैं, बनाने

वाले भी मांसाहारी, शराबी आदि शुद्र लोग होते हैं, उनके हाथ का बना हुआ पदार्थ भोजनादि खाने से बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

103. कहा भी है -

जैसा खावे अन्न, वैसा होवे मन।
जैसा पीवे पानी, वैसी बोले वाणी॥

104. गृहस्थी को चाहिये की अपने घर में एक घी का दीपक अवश्य रसोईघर के देव स्थान की जगह पर प्रतिदिन जलावे।

105. गृहस्थी को अपने घर देवता, कुल देवतादि को योग्य सत्कार, सन्मान कर सन्तुष्ट रखना चाहिये, नहीं तो वे घर में उपद्रवादि कर शक्ते हैं।

106. गृहस्थी को अपने इष्ट देवतादिक में अवश्य विश्वास रखना चाहिये, नहीं तो परिवार वृद्धि, व्यापार वृद्धि, सांसारीक सुख की प्राप्ति कभी नहीं मिल शक्ती।

107. गृहस्थी को अपने घर के जो भी कुल देवता है उनको संतुष्ट रखना चाहिये, प्रत्येक जाती के व प्रत्येक गोत्र के कुल देवता अलग-अलग होते हैं।

108. किसी गृहस्थी को अगर अपने कुल देवता का नाम मालुम न हो तो पद्मावति देवी को कुल देवता मान कर उनकी पुजा, अर्चना, मान सम्मान करना चाहिये, उससे उपद्रवों का नाश होगा।

109. गृहस्थी को सर्वप्रथम धर्म का पालन करना चाहिये, उसके बाद अर्थ (रूपया, धन) का उपार्जन करना चाहिये, तीसरा नम्बर काम पुरूषार्थ का पालन करना, फिर मोक्षपुरूषार्थ के लिये उद्यम करें।

110. पुरूषार्थ चार प्रकार का होता है, नंबर एक धर्म, नम्बर दो अर्थ पुरूषार्थ, नम्बर तीन काम, नम्बर चार मोक्ष पुरूषार्थ, जो सर्व प्रथम धर्म का पालन करता है उसको परंपरा से मोक्ष मीलता है।

111. धर्म से ही धन, सुन्दर स्त्री, और अंत में मोक्ष प्राप्त होता है, इसलिये गृहस्थी को धर्म कभी नहीं छोड़ना चाहिये, इसलिये हे बेटा! धर्म कभी मत छोड़ना।

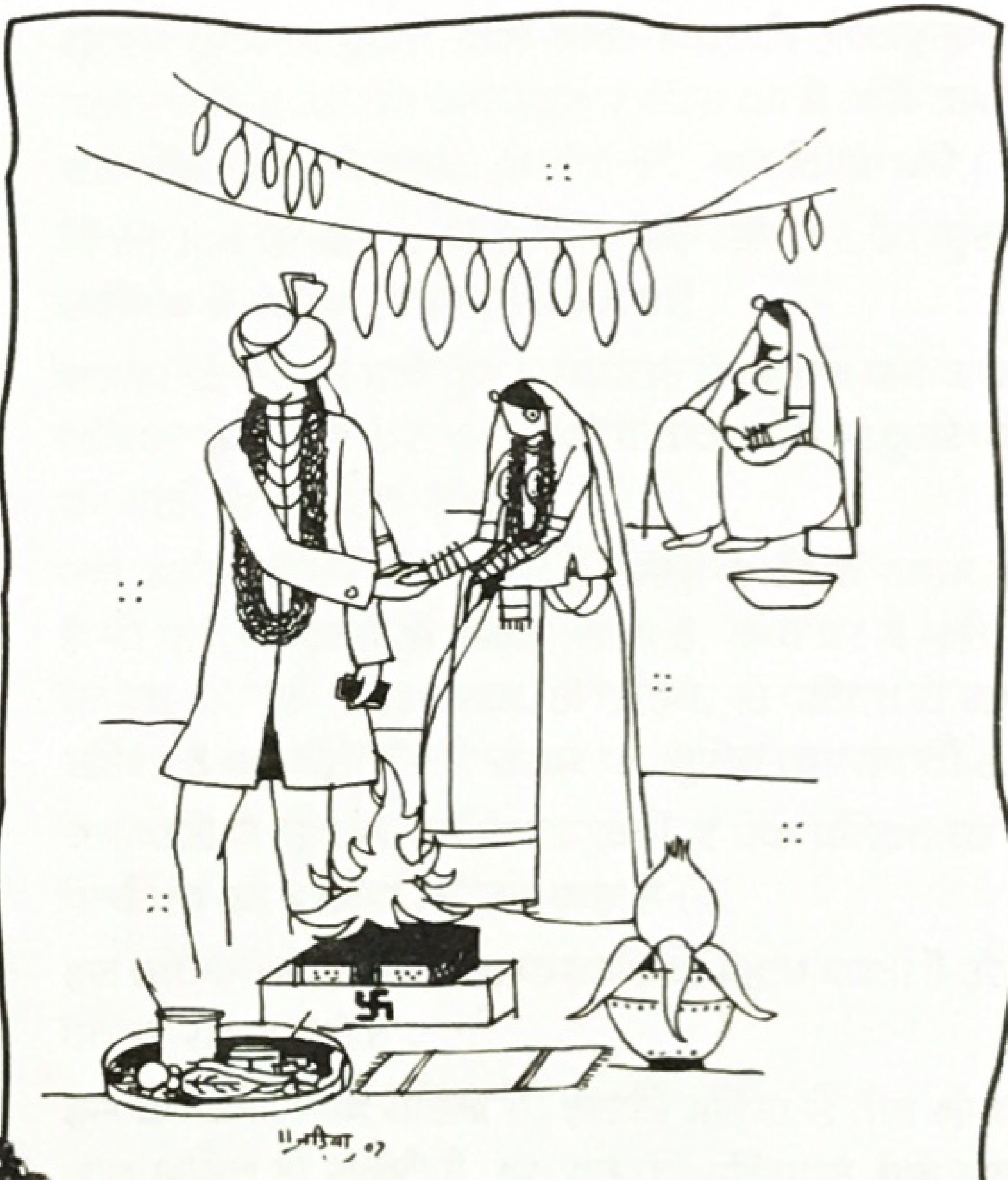

पति-पत्नी

पति-पत्नी

1. गृहस्थ युवक व युवति अपने माता-पिता की आज्ञानुसार स्व जाती, कुल व धर्म की परंपरानुसार योग्य वय में अग्नि साक्षी से सात फेरे पूर्वक विवाह के बंधन में बंधे, याने विवाह करें।
2. विवाह होने के बाद पत्नी व पति दोनों मिल कर देव गुरू के सानिध्य में स्वदार संतोषव्रत ग्रहण करें।
3. स्वदार संतोष व्रत याने पुरूष स्वपत्नी व्रत ग्रहण करे व पत्नी पतिव्रत धर्म ग्रहण करें, याने अपने पति को छोड़कर दुसरे परूष को भाई, बेटा व पिता समजे।
4. स्त्री पर्यायी महिला को साधु संतों ने मीट्टी के घडे के समान माना है जो एक के घर में ही उसकी शोभा है, अन्य घर में नहीं, स्त्री महिला को एक पतिव्रत होना ही चाहिये, जो पतिव्रत से सम्पन महिला है वह महिला सारे संसार को क्षुभित कर सकती है।
5. जैनाचार्यो ने गृहस्थ धर्म के अणुव्रतों में एक पतिव्रत या एक पत्नीव्रत को ब्रह्मचर्य अणुव्रत कहा है।
6. इस व्रत को जो कोई पालन करता है वो महान बनता है उसकी देव भी सेवा करते हैं।
7. इस व्रत की महान महिमा है, इसकी महिमा से तीन लोक के जीव क्षुभित हो सकते हैं, इस व्रत की महिमा से अग्नि जल हो जाती है।
8. इस व्रत के प्रभाव से देवों के आसन क्षुभित हो जाते हैं, देव सेवा के लिये दास के समान खड़े रहते हैं, मानव की क्या बात ?
9. सेठ सुदर्शन का इस व्रत के प्रभाव से सुली का सिहांसन बन गया, सीता सति की अग्नि परिक्षा के समय अग्नि का पानी हो

गया और भी अनेक महिला व पुरूष प्रसिद्ध हुवे इस एक पतिव्रत धर्म के प्रभाव से ।

10. सभी व्रतों में यह व्रत महीला व पुरूष के लिये शीलव्रत महाव्रत है, मानव अगर कोई व्रत नहीं पाले और सिर्फ इस व्रत का पालन करे तो भी उसको स्वर्ग सुख तो मिलता ही है, संसार सुख तो मिलेगा ही ।

11. महिला को पूर्ण ध्यान देना चाहिये, इस व्रत की तरफ उसके लिये यह शील व्रत महाधर्म है, जिसका शीलव्रत गया उसका सब कुछ गया, वह मात्र निर्गन्ध कागज के फुल की तरह है, मात्र वह एक मिट्टी के पुतले की तरह है ।

12. इस व्रत का पालन करने के लिये स्त्री और पुरूष को खान पान का पुरा ध्यान देना चाहिये, वस्त्राभुषण भी वैसे ही पहनना चाहिये, आंगोपांग दीखे वैसे वस्त्र कभी नहीं पहनना चाहिये ।

13. पुरूष को अपनी पत्नी पर पुरा विश्वास रखना चाहिये, पुरूष विश्वास न खोवे, तब ही उस का संसार चल सकता है, जो अपनी पत्नी पर विश्वास नहीं करता, उसको कभी भी संसार सुख नहीं मिल शक्ता ।

14. पत्नी भी अपने पति पर पुरा विश्वास कर संसार चलावे, पति पर शंका न करें, संशय परिवार में अशांति कर देता है, पति पत्नि में जगडा करा देता है, इसलिये एक दुसरे पर पूर्ण विश्वास रख कर गृहस्थ धर्म चलावें ।

15. पति व पत्नी दोनों को अति प्रेम, प्यार, स्नेह पूर्वक रहना चाहिये । विवाह करने का आनन्द तब ही है जब दोनों में अत्यंत प्रेम हो ।

16. जो पत्नी व पति का जोडा अत्यंत प्रेम प्यार पूर्वक रहता हो, दोनों में अगाढ प्यार हो, वही सुखी है उन्हीं के यहां देव अवतरीत होते हैं ।

17. अच्छे अच्छे महापुरूष शीलवति महिला के गर्भ में आते हैं, तीर्थंकर, चक्रवर्ती बलभद्र, नारायण, महामुनीश्वर, आचार्य

परमेष्टि आदि ।

18. जो महिला पापीनी है, पर पुरूष गामीनी है, हींसक है, असत्य भाषण करने वाली, क्रुर है, दया भाव से रहित है, नींदक व इर्षालु है, उसके सर्वप्रथम तो सन्तान ही उत्पन्न नहीं होगी, अगर सन्तान उत्पन्न होगी भी काणी, कुबडी, लुली, लंगडी, अन्धी, पापी, दुष्ट, दुर्जन व्यभीचारी, उत्पन्न होगी ।

19. इसलिये महिला को परम पवित्र रहना चाहिये, महिला को धर्मपत्नी कहा है, महिला चाहे तो अपने पति को स्वर्ग में पहुंचा देवे, महिला चाहे तो अपने पति को नरक में पहुंचा देवे ।

20. संसार में ऐसा देखा जाता है की पुरूष की अपेक्षा महिला ज्यादा धर्म करती है, उसीके कारण पुरे घर में धर्म का पालन होता है, मां अगर धर्मात्मा है तो संतान भी धर्मात्मा निकलेगी ।

21. इसीलिये सर्वप्रथम मां को गुरू कहा है, मां के संस्कार ही संतान के उपर पड़ते हैं, चाहे अच्छे संस्कार हो चाहे बुरे, संतान को धर्मात्मा बनाने के लिये प्रथम मां-बाप को सुसंस्कारित व धर्मात्मा बनना चाहिये ।

22. सुसन्तान उत्पन्न करके पति व पत्नी दोनें ही को आगे संसार चलाना है, सुसंतान पैदा करने के लिये सात्विक रहना परम आवश्यक है ।

23. विवाह हो जाने के बाद पति व पत्नी दोनों ही सुसन्तान उत्पन्न करने के लिये सुविचार रखें, फिर दोनों ही एक दुसरे में पूर्ण आशक्त होकर रात्रि चर्या करे, मैथुन करे ।

24. पति व पत्नी को संसार (वंश) चलाने के लिये ही भोगों को भोगना चाहिये, अन्यथा नहीं ।

25. अमर्यादित भोगों को भोगने से पाप भी लगता हैऔर शरीर रोगी हो जाता है, जादा काम वासनाशक्त नारी व नर अगर भोग भोगते हैं, मैथुन सेवन करते हैं तो शरीर टी.वी. क्षय रोग से ग्रसीत हो जाता है, शरीर क्षीण हो जाता है व अल्प समय में ही मर जाता

है।

26. पति व पत्नी जादा भोगाशक्त होकर काम सेवन न करें, मात्र सुयोग्य व धर्मात्मा साधु पुरूष को उत्पन्न करने के लिये मैथुन सेवन करें।

27. पापी संतान को उत्पन्न करने की अपेक्षा निःसंतान रहना चाहिये, किन्तु पापी, दुष्ट, दुर्जन, हिंसक, दया से रहित, परपीड़ा देने वाली, संतान कभी उत्पन्न न करें।

28. आयुर्वेद ग्रंथ के अनुसार पुरूष व स्त्री को गरमी के दिनों में एक महीने के बाद, बरसाद के दिनों में पंद्रा दिनों में एक बार, ठंडी के दिनों में सात दिनों में मैथुन सेवन करना चाहिये।

29. जो स्त्री पुरूष उपरोक्त नियम का पालन करते हैं वो कभी अशक्त नहीं होते, निरोग रहते हैं, उनको कभी अन्धापन नहीं होता है, याने आँखों की रोशनी कभी कम नहीं होती, शरीर निरोग रहता है, अनेक रोगों से बच जाते हैं।

30. अधिक संतान न उत्पन्न कर एक दो ही संतान उत्पन्न करें, किन्तु धर्मात्मा व देश सेवी संतान उत्पन्न करें।

31. स्त्री व पुरूष काम सेवन पशु के समान न करें। जादा से जादा ब्रह्मचर्य का पालन करें। एक बार मैथुन से स्त्री की योनि में जन्मने वाले नौ कोटी पचेन्द्रिय मनुष्यजाती के सम्मुर्च्छन जीव मरते हैं। महाहिंसा होती है।

32. हिंसा से बचने के लिये, निरोगता के लिये व धर्म के लिये कम से कम मैथुन सेवन करें।

33. स्त्री के रजस्वला होने के बाद चौथे दिन से दश रात्रि तक ही गर्भादान का समय रहता है, उससे आगे नहीं, इसलिये दश रात्रि के बाद ब्रह्मचर्य का पालन करें।

34. अगर पुत्र की इच्छा है तो एम.सी.(रजस्वला) के चौथे दिन, छटे दिन, आठवे दिन व दशवे दिन रात्रि चर्या करें और पुत्री की इच्छा है तो रजस्वला के पांचवे दिन, सातवे दिन व नौवे दिन मैथुन

सेवन करें बाद में रात्रिचर्या न करें। दश रात्रि के बाद मैथुन सेवन करने के बाद गर्भादान नहीं हो शक्ता, व्यर्थ शक्ती नष्ट होती है, इसलिये इतने दिनों तक ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करना चाहिये।

35. पति पत्नी का संयोग होने पर भी अगर महिला गर्भवति नहीं हुई तो शीघ्र कोई अच्छे अनुभवी वैद्य या डाक्टर को दोनों जनों को दिखाना चाहिये और दवाइ लेना चाहिये ताकी दोनों सन्तान उत्पन्न करने योग्य हो जावे।

36. पति या पत्नी इन दोनों में अगर कोई खराबी है तो संतान उत्पन्न नहीं हो शक्ती, सन्तान के लिये दोनों में ही योग्यता होनी चाहिये, कहने का मतलब दोनों को ही चेकप कराना चाहिये।

37. जिसको भी खराबी है उसे औषध सेवन कर निरोगता प्राप्त कर लेना चाहिये, याने सन्तान उत्पन्न करने योग्य बन जाना चाहिये। तब ही सन्तान उत्पन्न रूप कार्य हो शक्ता है।

38. पति व पत्नी योग्य अनुभवी डाक्टर या वैद्य की सलाह लेकर उनके देख रेख में औषधी सेवन करें, पति के अन्दर कमी हो तो पति दवाई लेवे, पत्नी के अन्दर कमी हो तो पत्नी दवाई खावे, अवश्य संतान रूप कार्य होगा।

39. स्त्री को स्त्री रोग चिकित्सा करवा लेना चाहिये और पुरूष के अन्दर कोई कमी हो तो उसको भी चिकित्सा करवा लेना चाहिये।

40. पूर्व पुण्य के उदय से पत्नी अगर गर्भवति हो गइ तो उस महिला का पूर्ण ध्यान रखे, रख रखाव रखे, पुनः गर्भस्त्राव न हो, एसा स्वयं महिला को ध्यान रखे व उसका पति भी पूर्ण ध्यान रखे।

41. पत्नि गर्भवति हो गई तो पति संयम का पालन करें, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें नहीं तो गर्भत्स बालक को कोई भी क्षति पहुंच शक्ती है।

42. महिला गर्भवति हो गई तो उसके खान पान का पूर्ण ख्याल रखे, गरम मसाला आदि गरम पदार्थ न खावे, भारी सामान न उठावे, कुदने फांदने का कार्य न करें, नही तो गर्भ स्त्राव हो शक्ता

है।

43. महीला गर्भवति हो जाने के बाद गर्भवति महिला को चक्कर आना, उल्टी होनादि कार्य अक्सर होते हैं, इसलिये घबड़ाने की कोइ जरूरत नहीं, योग्य डाक्टर के पास जा कर योग्य दवाइ लेना चाहिये।

44. पुरूष को चाहिये की वो अपनी पत्नी का पूर्ण ध्यान रखे, उसको कोई चिन्ता न होने दे, ऐसे ही पदार्थ भोजन में देवे जिससे गर्भत्स बालक को व गर्भवती महिला को कोई क्षति न हो।

45. गर्भवति महीला को अनेक प्रकार के दोहले होते हैं, अगर कोई पापी जीव गर्भ में आया हो तो अशुभ दोहले होते हैं और पुण्यात्मा जीव गर्भ में आया हो तो शुभ शुभ दोहले आते हैं, दोहले मतलब इच्छाविशेष।

46. अक्सर करके देखा जाता है की गर्भवति महिला मिट्टी खाती है, कोयले खाती है, चुले की मिट्टी खाती है, ऐसे पदार्थ गर्भवति महिला को नहीं खाना चाहिये नहीं तो गर्भत्स बालक को हानि पहुंच जाती है, मुलतानी मिट्टी खाने से बालक गर्भ में चिपक शक्ता है।

47. अगर गर्भवति महिला को अच्छे अच्छे फल खाने की इच्छा होती हो तो अथवा कोई तीर्थ क्षेत्र की वंदना के भाव, गुरू दर्शन के भाव, शास्त्र पडने की इच्छा हो, पर उपकार करने के भाव, देश सेवा वीर भाव, गुरू सेवा, दान पुण्य करने की भावना उत्पन्न हो तो समजो उसके गर्भ में कोई विशेष महापुरूष आया है।

48. गर्भवति महिला को अगर मारने के भाव, हिंसादि पंचपापों के इर्ष्या, निन्दा, अधर्म के, रक्त पीने के भाव आदि आते हों तो समजो कोई पापी जीव गर्भवति महिला के गर्भ में है, दुष्ट संतान से पृथ्वी पर अधर्म, पाप, होता है।

49. पति अपनी पत्नी के गर्भ में पुत्र हो या पुत्री, सन्तुष्ट रहकर उसके गर्भ की रक्षा करें, अपनी पत्नी से कभी ग्लानी नहीं करे, न उसे

गर्भपात करने के लिये तंग करे, ब्रुण हत्या बहुत बड़ा भारी पाप है, पंचेन्द्रीय जीव की हत्या करना माने नरक में जाना है, इस प्रकार की हिंसा करने वाला अवश्य नरक में जाता है।

50. पति को अपनी पत्नी गर्भवती हुई है ऐसा जान कर प्रसन्न होना चाहिये, अपनी जातिगत धार्मिक क्रीयाएं मंदिरों में जाकर अवश्य करना चाहिये। गोद भराइ आदि व्यवहारिक क्रीया भी करना चाहिये।

51. गर्भवति महिला को आर्तध्यान, रोद्र ध्यान कभी नहीं करना चाहिये, अपने इष्ट देवता का जाप या णमोकार महामंत्र का जाप करना चाहिये या तीर्थंकरादि महापुरूषों का जीवन चरित्र पडना चाहिये, उससे गर्भत्स बालक के उपर अच्छे संस्कार पडे, वह धर्मात्मा निकले।

52. गर्भवति महिला को नौ महिना धर्मध्यान पूर्वक ही निकालना चाहिये, एसा कोई कार्य जैसे रोनादि न करे जिससे गर्भत्स बालक को क्षति पंहुचे और वो बालक लुला, लंगडा अन्धादि हो जावे।

53. गर्भवति महिला के नौ महिना पूर्ण हो जाने के बाद प्रसुति के लिये योग्य डाक्टर के पास प्रसुति करा लेनी चाहिये, जिससे महिला व बच्चा दोनों ही सुरक्षित रहें, बिना कष्ट के प्रसुति हो जावे।

54. पति अपनी संतान उत्पन्न होने के बाद जन्मोत्सव मनावे, खुशियां मनावे, लोगों को दान बांटे, धार्मिक महोत्सव मनावे, आनन्द व्यक्त करे।

55. संतान उत्पन्न होना मानो काम पुरूषार्थ का फल है, मनुष्य जन्म पाना उसी का सार्थक है जिसने धर्म का फल, अर्थ का फल, काम का फल पाया हो, मात्र एक पुरूषार्थ का फल पाना ही मनुष्यता नहीं, अंतिम तो सबको मोक्ष जाने का ही पुरूषार्थ करना चाहिये।

56. माता-पिता को चाहिये की अपनी संतान को सुसंस्कारीत करे,

षोडस संस्कारों से संस्कृत करे, वही संतान हमारा आगे वंश चलाता है, नाम कमाता है।

57. अगर पुत्र सुयोग्य हो तो माता पिता का नाम होता है उसका भी नाम होता है, यह एक गौरव का विषय है, पिता को अन्दर स्वाभिमान रहता है की यह मेरा पुत्र है।

58. अपने पुत्र को सुयोग्य विद्याभ्यास करवाना चाहिये, बहतर कला से संयुक्त करना चाहिये, प्रत्येक प्रकार का अभ्यास करवाना चाहिये जिस से संतान सुयोग्य निकले।

59. अगर पुत्री हो तो उसको भी सुयोग्य शिक्षा देकर कलावान बनाना चाहिये, क्योंकि कन्या रत्न सब रत्नों में श्रेष्ठ रत्न है, कन्या रत्न दोनों कुलों का नाम करती है, ससुराल पक्ष का भी और पिता पक्ष का भी इसलिये कन्या रत्न को और भी विशेष रीति से सुसंस्कारित करना चाहिये। विद्याभ्यास करवाना चाहिये।

60. कन्या रत्न का जन्म होते ही पिता को उसके परिवर्ष का पुरा ध्यान देना चाहिये, षोडस वर्षीय कन्या होते ही उसका विवाह करना है, इसलिये अपनी कमाइ का कुछ हिस्सा कन्या के नाम का अलग रखना चाहिये, जिससे की कन्या के विवाह के समय विवाह में अडचन उत्पन्न न हो।

61. कन्या को योग्य महिला गुरू विद्याभ्यास करावे और कन्या भी अपनी मर्यादा में रह कर विद्याभ्यास करे, कन्या दश वर्ष की उमर के बाद अपने आंगोपांग को सुरक्षित कर मर्यादापूर्वक चाल चलन रखे, माता पिता की आज्ञा का पालन कर आना, जाना खाना, पीना, चलना, फिरना आदि का पूर्ण ध्यान रखे, पुरूष सम्पर्क से दूर रहे, भाई, पिता, गुरू जनों को छोड़कर पर पुरूष से मर्यादित बोले, चाले, व्यवहार रखे, अनजाने पुरूष से जादा व्यवहार न रखे।

62. कन्या को अपना शीलसंयम सुरक्षित रखना परम आवश्यक है, नहीं तो अपवादित हो जाये, एक बार कन्या अपवादित हो गई तो

संसार में मुंह दिखाने लायक नहीं रहती, इसलिये पुरूष व्यवहार से दूर रहे, यही कन्या की मर्यादा है ।

63. कन्या को अनजान पुरूष के साथ व्यवहार नहीं करना चाहिये, नहीं तो शील संयम खराब हो शक्ता है, बदनामी हो शक्ती है जिससे विवाह में अडचन पैदा हो शक्ती है, पुरा जीवन खराब हो शक्ता है, कोई कपडे पर दाग की तरह दिखता रहेगा ।

64. कन्या अपने पहनने योग्य वस्त्रों का भी पूर्ण ध्यान रखे, अधिक पतले कपडे न पहने, आंगोपांग दिखे ऐसे वस्त्र भी नहीं पहने । भारतीय नारी को आंगोपांग ढके रहते हैं, खुले दिखते नहीं, नारी का स्वरूप ही लज्जा है, नारी की लज्जा गई तो सब कुछ गया ।

65. कन्या के षोडस वर्शीय होने पर उसके मां बाप व परिवार वालों को उसके विवाह की चिन्ता करनी चाहिये कन्या को जादा बडी न करें । जादा से जादा अठारह वर्ष में उसका विवाह हो जाना चाहिये ।

66. स्वजाती व योग्य कुल परंपरा वाला सद्‌गुणी, सुन्दर, धर्मात्मा पर उपकारी, मां बाप की सेवा करने वाला, अपनी कन्या के लिये वर देखें और उसके साथ ही विवाह कर देवे ।

67. अपनी कन्या का विवाह योग्य शुभ मुहुर्त में करे, अपनी शक्ती के अनुसार दहेज भी देवें और अपने घर से विदा करे क्योंकि लडकी पराया धन है, उस पर माता-पिता का शादी के बाद कोई अधिकार नहीं होता ।

68. किसी कारण वसात लडकी ससुराल से वापस लौट कर पिता के घर आती है तो पिता व भाइयों का पूर्ण कर्त्तव्य है की उसकी सुरक्षा करे, ससुराल से वापस आने में कोई अगर छोटे मोटे कारण हो तो घर पर जमाइ को बुलाकर समजा कर लड़की को सुसराल वापस भेज देवे ।

69. अगर कोई बड़ा कारण हो तो भाई व माता पिता उस लड़की की

पूर्ण सुरक्षा अपने घर में करें, लड़की को सुसराल वापस न भेजें।

70. अगर लड़की का पति मर गया और लड़की विधवा हो गई हो और सुसराल वाले बहु को रखने के लिये तैयार नहीं तो माता पिता भाई आदि उस असहाय लड़की को अपने पास रखकर उसकी रक्षा करे, यही धर्म है।

71. अगर लड़की बाल विधवा हो गई हो तो प्रथम तो उसके ससुराल में ही रखे, सुसराल में अगर उसकी सुरक्षा नहीं है तो पिता व भाई आदि का कर्त्तव्य है की उस लड़की की रक्षा करे, जैन धर्म विधवा विवाह को स्वीकार नहीं करता, नारी का शील ही भूषण है।

72. विधवा महिला का भी पूर्ण कर्त्तव्य है की पति के मरने के बाद ब्रह्मचर्य का पालन करे, किन्तु दुसरा विवाह करने का विचार न करे, एक हुवा वो भी हमारे भाग्य में नहीं था तो दुसरे का क्या विश्वास ?

73. महिला को विधवा होने के बाद श्रृंगार नहीं करना चाहिये, सफेद वस्त्र पहने, आभुषण, बिंदी, मांग में कुंकु, चूड़ी आदि से रहित अपना शरीर रखे, सादा भोजन करे व धर्म के विचार रखे, पूर्ण शीलव्रत का पालन करे।

74. विधवा या असहाय महिला अपनी बहन हो, लड़की हो, भोजाइ हो, मां हो उन सबकी रक्षा करे, अगर उनकी सन्तान है तो उनका भी रक्षण करे, पड़ने लिखने व्यवसाय की व्यवस्था कर उनकी रक्षा करे, उन को कष्ट न होने पावे पूर्णध्यान रखें।

75. घर की कोइ भी महिला असहाय हो या विधवा हो, अगर वो युवती है तो उसको प्रथम धर्म मार्ग में लगावे, किसी आर्यिका माताजी की संगती में डाले, अगर उस योग्य नहीं है तो उसको पडा लिखा कर उसके पांव पर खड़ा कर देवे, कहीं नौकरी आदि लगा देवें ताकी उसका जीवन निर्वाह होता रहे।

76. किसी कारण वसात हमारे घर की महिला असहाय होकर गलत

मार्ग को पकड लेती है तो उस का पाप माता पिता भाई आदि को लगेगा, किसी भी कारणवश हमारे घर की महिला कुमार्ग पर न लगे उसका पूर्ण ध्यान घर के मुखिया को रखना चाहिये, नहीं तो दोनों कुल अपवादित होंगे ।

77. महिला के विधवा होने के बाद या पति के छोड देने के बाद धर्म का मार्ग अपनाना ही सर्वोत्कृष्ट मार्ग है, दीक्षा लेकर आत्मकल्याण करना चाहिये, आत्मकल्याण ही श्रेष्ठ मार्ग है ।

78. अगर पुरूष भी हो तो उसको पत्नी के मर जाने के बाद या पत्नी के भाग जाने या छोड़ जाने के बाद धर्म का मार्ग अपनाना चाहिये और सद्गुरू के चरणों में जाकर जिनदीक्षा ग्रहण कर आत्म कल्याण के मार्ग में लगना चाहिये, यही एक सद्मार्ग है, नहीं तो कम से कम ब्रह्मचर्य का पालन तो करना ही चाहिये । अणुव्रतों को धारण कर रहे ताकी मनुष्य जन्म सार्थक हो ।

79. धर्म का मार्ग न अपना सके तो नहीं सही, किन्तु पाप का मार्ग तो नहीं अपनावे, उत्तम जाती, उत्तम कुल, उत्तम धर्म बहुत ही मुस्कील से मीलता है उसका अवश्य सद्उपयोग करे, भोगों को भोगना ही मानवता नहीं ।

80. किसी कारण वसात सन्तान उत्पन्न नहीं हुई तो कीसी साधर्मी का अथवा अपने परिवार का ही वंश चलाने के लिये लडका दत्तक ले लेवे और योग्य उसकी परीवर्ष करके पाले, पोषे, बड़ा करे और पडावे, लिखावे, व्यवसाय करना सिखावे, उसका विवाह कर अपना उत्तराधिकारी बना देवे । अपना हिस्सा छोड़कर सबका सब धन संपति आदि उसको दे देवे ।

81. दत्तक पुत्र को भी चाहिये की वह अपने माता-पिता की तरह ही उनकी रक्षा करे, उनकी सेवा करे और उनका वंश चलावे, साथ में धर्म का भी पालन करे, सदाचार का पालन करे, न्याय निति से रहे धन का दुर्उपयोग न करे, सद्उपयोग करे ।

82. गृहस्थ को दत्तक पुत्र कब लेना चाहिये ? जब स्वयं को कोई

सन्तान उत्पन्न नहीं हुई हो अथवा लड़कीयां ही लड़कीयां उत्पन्न हुई हो तो गृहस्थ को अपना वंश चलाने के लिये या बुढापे में अपनी सेवा हो इसलिये दत्तक लेवे ।

83. दत्तक लेते समय गृहस्थ को यह ध्यान पुर्ण रखना चाहिये की जिसका भी पुत्र दत्तक लेना हो वह पुत्र अत्यंत छोटा हो तब ही लेना चाहिये, ताकी उसका जीव दत्तक लेने वाले के अन्दर पड जावे या फिर अत्यंत योग्य, समजदार व सरल स्वभाव के पुत्र को दत्तक लेवे ताकी वह दत्तक लेने वालों की सेवा करे ।

84. अयोग्य संतान को दत्तक लेने से वंश वृद्धि न होकर वंश का नाश हो जाता है, दुष्ट व दुर्जन संतान से तो निःसंतान रहना अच्छा है । दत्तक पुत्र इसलिये लिया जाता है की धर्म, धन व परिवार की रक्षा करे और माता पिता की सेवा करे ।

85. दत्तक पुत्र हो या अपना स्वयं का पुत्र हो पुत्र का परम कर्त्तव्य है की वह माता, पिता व परिवार की सेवा करता हुआ, धर्म, अर्थ, काम का सेवन करता हुआ मोक्ष के लिये पुरषार्थ करे, जिससे की स्वकल्याण के साथ-साथ पर का भी कल्याण हो ।

86. पत्नी को अप्रने पति का पुरा ध्यान रखना चाहिये, उनकी सेवा करे पति को सुलाने के बाद स्वयं सोवे, पति के उठने के पहले निंद से उठ जावे, पति को प्रतिदिन पांव दबाकर सुलावे, पति को खाना खिलाने के बाद स्वयं खावे ।

87. पति का विश्वास न खतम हो पत्नी एसा ही कार्य करे, उनकी आज्ञा का पालन करे, पति के बोलने पर शांतता से सुने, कभी जवाब प्रतिजवाब न करे, मुंह जोरी न करे, क्लेस बडे वैसा कार्य न करे ।

88. महिला को चार पद दिये हैं, जब महिला अपने पति को भोजन कराती है तब माता के समान, जब महिला अपने पति की सेवा करती है तब दासी के समान, जब पति के साथ रमण करती है तब पत्नी, जब पति संकट में पड जाता है तब पत्नी का पुरा

कर्त्तव्य है कि अपने पति का संकट काल में साथ देवे, पति को अच्छा मार्ग दिखावे, मंत्रणा देवे, इसलिये उसको मंत्री कहा है।

89. माता, मंत्री, दासी और पत्नी, ये चार पद स्त्री को ऋषिओं ने दिये हैं, जो ये चार पद का काम करती है उसी को धर्मपत्नी कहा है, दुसरी को नहीं, सुयोग्य महिला का सर्वोपरी स्थान है, पतिव्रता नारी को नियम से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, देवता भी उसके चरणों की सेवा करते हैं।

90. पत्नी को पति की अर्धांगीनी कहा है, धर्मपत्नि भी कहा है और स्त्री अपने पति को हर तरह से प्रसन्न रखती है, पति के कष्टों को जो अपना कष्ट समजती है वही सद्नारी है।

91. पति के लिये तो सद्पत्नि एक संबल और परम सहारा है, जीवन साथी है, समय पर काम आती है, एक बार अपना जीवन देकर भी पति के संकट का निवारण करती है, भारतीय नारी का एक यह भी सर्वोत्तम रूप है।

92. भारतीय नारी माँ भी है, बहन भी है, स्त्री भी है, बेटी भी है, नणंद भी है, भोजाइ भी है, जेठाणी भी है, देवराणी भी है, सासु भी है, दादी भी है, इस प्रकार भारतीय नारी के अनेक रूप हैं। भारतीय नारी अगर योग्यता के अनुसार कार्य करती है तो पूज्य बन जाती है।

93. **नारी नारी मत कहो नारी नर की खान।**
नारी कोख से ही जन्मे तीर्थंकर भगवान॥

नारी को पृथ्वी के रूप में क्षमा शील माना है, जैसे पृथ्वी (धरती) क्षमा शील होती है, पृथ्वी को कोई कुटता है, पीटता है, खोदता है, अग्नि जलाता है, पेड लगाने के लिये खडे करता है, हल जोतता है आदि उपद्रव पृथ्वी सहन करती है, उसी प्रकार भारतीय नारी भी सहन करती है।

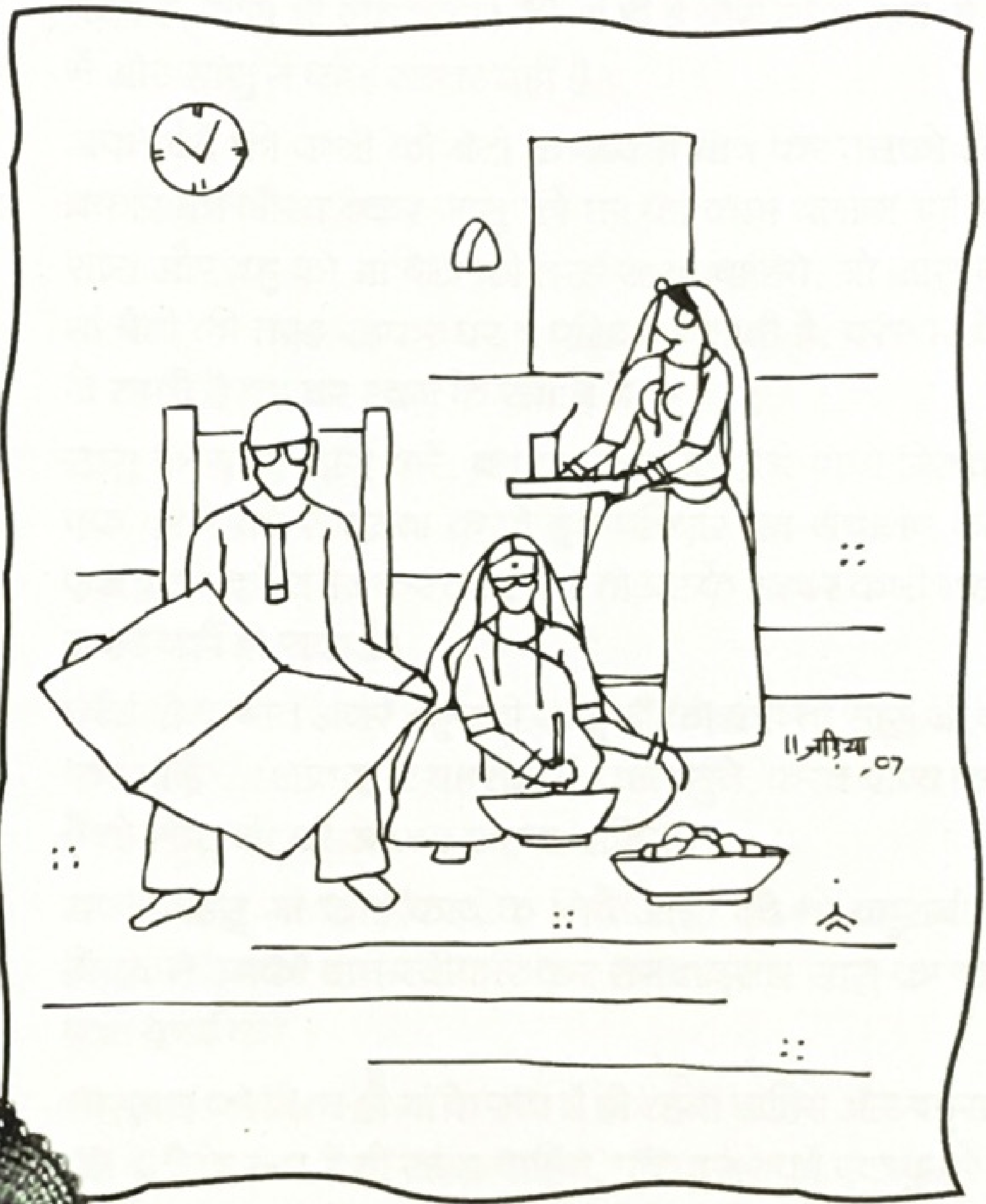

सास-ससुर

सास - ससुर

1. नारी का एक रूप सासु का भी है, जिसको अपने पति की माता कहा है, सासु भी एक प्रकार की मां ही है, वैसे माना जाय तो मां में और सासु में कोई अन्तर नहीं है ।
2. अपने बेटे की पत्नी को बेटी के रूप में मान कर उसको उसी प्रकार का गौरव देकर सासु को घर का काम चलाना चाहिये, सास और बहु को मां बेटी की तरह रहना चाहिये, जो सासु बहु मां बेटी की तरह रहकर घर व परिवार चलाती है, परस्पर प्रेम से रहती है वह घर स्वर्ग के समान है ।
3. सासु का कार्य सासु करे, बहु का कार्य बहु करे दोनो मिलकर एक दुसरे को सहायता करते हुवे परिवार का संचालन करे, एक दुसरे को समजकर कार्य करे तो घर के अन्दर कभी लडाई जगडे नहीं हो सकते ।
4. कोई योग्य बात अगर बहुरानी सासु जी को कहे तो सासु जी का कर्त्तव्य है की शांतता से बहुरानी की बात सुने, करने योग्य कार्य है तो सासु जी को अवश्य कहना चाहिये ।
5. अपनी सासु मां कोई कार्य के लिये आज्ञा देवे तो बहुरानी भी विनय से उनकी बात स्वीकार कर समयानुसार सासु का कहा हुआ कार्य करे ।
6. सासुबाई को नित्य ही मां के रूप में ही रहना चाहिये और बहुरानी को बेटी के रूप में ही रहना चाहिये, एक दुसरे को एक दुसरे के पद के अनुसार ही रहना चाहिये ।
7. बहुरानी अपनी जो सासु है, उसको मां समजकर उसकी आज्ञा का पालन करते हुए उसकी सेवा करे और ससुर को पिताजी के रूप में मानती हुई उनकी सेवा करें, नित्य ही दोनों को जय जिनेन्द्र

करते हुवे पावां ढोक करे।

8. इस प्रकार का आचरण करने वाली बहु उस घर में राज्य करती है, सबकी प्रेम पात्र बनकर रहती है बहु तो घर की लक्ष्मी है, सबको उसके साथ सद्व्यवहार करना चाहिये।

9. जेठाणी भी अपने से छोटी देवराणी का पूर्ण सन्मान करे और देवराणी का भी पूर्ण कर्त्तव्य है की अपने से जेष्ट जेठाणी का विनय करे सन्मान देवे, सासु के अभाव में उसको अपनी बड़ी बहन समजकर मान सन्मान करे।

10. जो जेठाणी और देवरानी परस्पर इर्ष्या द्वेष को छोड़कर प्रेम प्यार से रहे तो वह घर स्वर्ग बन जाता है, उस घर में प्रेम प्यार की गंगा बहने लगती है, उस घर में कभी जगडे नहीं होते, भाइ भाइ में भी कभी जगडे नहीं होते।

11. देखा जाय तो स्त्री ही लडाइ की जड़ है, भाइ-भाइ में, पिता-पुत्र में, परिवार में स्त्री तेरा-मेरा कर जगडे लगा देती है, अपने पति को झुट-सांच लगाकर घर में जगडे करवा देती है, अगर घर की स्त्रीयों में परस्पर प्रेम प्यार है तो घर की शांति कभी नहीं टुटती है।

12. ससुर को भी अपनी बहुरानीओं का पूर्ण ध्यान रखना चाहिये, किसी भी चीज का अभाव न होने दे, दुसरे की बेटी को अपनी बेटी बनाकर लाये इसलिये उसको बेटी ही समजे और वैसा ही व्यवहार करे, उसे कोई कष्ट न होने दे, बहु को सताना महापाप है।

13. जो सास ससुर अपनी बहुओं को प्यार न देकर सताते हैं, कष्ट देते हैं, वो सास ससुर महापापी हैं, घोर नरक में जाकर कष्ट भोगते हैं।

14. जो बहुएं अपने सास ससुर को मान सन्मान न देकर उनका अपमान करती हैं, अनादर करती हैं, उनकी आज्ञा का पालन नहीं करती, वो बहुरानियां भी इस भव में भी दुःखी होती हैं और

आगे के भव में भी ।

15. ससुर को पूर्ण ध्यान रखना चाहिये की मेरी पत्नि अथवा मेरी बेटी कहीं बहुओं के ऊपर अन्याय तो नहीं कर रहे, ना ही बहुओं को कष्ट तो नहीं दे रहे अगर किसी प्रकार की भी सास बहु में कटा कटी है तो अथवा विचार भेद है तो किसिका भी पक्ष न लेकर सबको समजाकर शांति कर देनी चाहिये ।

16. महिलाओं की अपेक्षा पुरूष गंभीर होते हैं, गंभीरता से विचार कर दोनों तरफ के लोगों को समजाकर सब को शांत करना चाहिये, विचार भेद व घर में जगडे नहीं होने चाहिये नहीं तो घर नरक बन जाता है ।

17. अगर सास बहु में विचार भेद रहा तो वह घर टुट जाता है, पिता पुत्र में जगडा होकर एक घर के दो घर बन जाते हैं, बेटा अपनी पत्नी को लेकर मां बाप से अलग हो जाता है, बेटा मां बाप से अपना हिस्सा मांगने लगता है, और धन के लिये पिता पुत्र में शत्रुता हो जाती है ।

18. संसार में जर, जोरू (स्त्री), जमीन ये तीन ही लड़ाई के कारण हैं, ये तीनों चीजें चाहे मां बाप हो, चाहे भाइ बंधु हो, चाहे कुटुंब कबीला हो, परस्पर इस के लिए जगडने लगते हैं, तो फिर बेटा क्यों नहीं ? इन चीजों के लिये मां बाप से लडे, फिर स्व पत्नी का कारण मिला तो अवश्य लडे ही लडे, कारण सास बहु की लडाई ।

19. इसलिये ये पुरा ध्यान रखे की सास बहु में कभी लडाइ न हो, इन दोनों की लडाइ से घर में महा भयंकर उत्पात व उपद्रव हो जाते हैं, बहु को मारने के आरोप, बहु को जिन्दा जलाने के आरोप, विष देकर मारने के आरोप, मार पीट के आरोप लगते हैं, पुलिस ठाणा, कोर्ट, कचेरी आदि होते देखे जाते हैं या जेल की सजा भी होती देखी जाती है ससुर, सास, पति आदि को ।

20. सास बहु का जगडा हुआ तो बहुए स्वयं तेल डालकर जलकर मरती हुई देखी जाती है या विष खाकर या पानी में डुब कर या

फांसी लगाकर मरती है ।

21. इस प्रकार का भयंकर उपद्रव सास बहु की लडाइ से हो शक्ता है, इसलिये दोनों तरफ से समताधारण करें और शांत रहें, दोनों तरफ से सहनशीलता रखे ।

22. सासु तो मां की तरह होती है, ससुर पिता के समान होते हैं, एक बार अगर कोइ गेर समजुती के कारण जगडा होने का कारण भी मिला तो बहुरानी को क्रोध करके उग्रता धारण नहीं करना चाहिये ।

23. जिस प्रकार स्वयं के माता पिता ने शादी होने के पहले स्वयं के घर में स्वयं से कोई गलती होने से मां बाप ने डाटा, फटकारा, मारा भी तो शांति रखते हैं, वैसे ही सास-ससुर के कहने पर शांति रखें, क्रोध तो कभी करना ही नहीं चाहिये ।

24. लडकी चाहे माता पिता के घर में हो चाहे सास ससुर के घर में हो शांतिपूर्वक क्रोध छोडकर बहु बन रहना चाहिये, बहु भी आगे जाकर सासु बनती है, जेठाणी बनती है ।

क्षमा बडन को चाहिये छोटन को उत्पात,
विष्णुजी ने कांही बिगाड्यो जो भृगुजी मारी लात ।

25. चाहे छोटा हो या बडा, चाहे सास हो या बहु, क्रोध, इर्ष्या, द्वेष, माया, कपट को छोडकर रहे, जो इन चीजों को छोडता है वह महान बन जाता है, पुज्य बन जाता, उसका यश सारे संसार में फैल जाता है, उसका अनुकरण दुसरे लोग भी करते हैं ।

26. बहुरानी को भी चाहिये की कभी भी केसी भी परस्थिति आने पर भी मरने का विचार न करें न स्वयं की जीवहानी करे, मर गये तो ठीक अगर नहीं मरे तो जीवन भर कष्ट उठाना पडता है, लोगों के ताने सुनने पडते हैं, लोगों की दृष्टि से गिर जाते हैं ।

27. अगर किसी कारण वसात आत्म हत्या कर दिया तो दोनों परिवार के लोग दुःखी होंगे और स्वयं का कुमरण होगा, मर गये तो दुर्गति अवश्य होगी और पुनः मनुष्य भव मिलना कठिन हो जायगा ।

28. आत्म हत्या की अपेक्षा किसी भी धर्म गुरू की शरण में जाकर धर्मसाधना में लगे तो कल्याण अवश्य होगा, इस भव में भी शांति और परभव में भी शांति मिलेगी, सास, ससुर, पति, माता, पिता, सब परिवार को छोडकर वैरागी बन दीक्षा लेकर आत्म कल्याण करें, यही श्रेष्ठ मार्ग है, न की आत्महत्या।

29. मनुष्य भव मिलना अत्यंत कठिन है, उसमें भी उत्तम जाती, कुल मिलना कठिण है, इसलिये इनका दुरउपयोग न कर सद्उपयोग करें, इससे दोनों कुल उज्वल होंगे, दोनों कुलों का नाम होगा। लडकी चाहे तो नाम डुबा भी सकती है और चाहे नाम कमा सकती है। इसलिये अच्छे कार्य ही करना चाहिये, परोपकार के कार्य करें, दुसरे को सुखी करने का उपाय करे, पुण्य करें, धर्म का पालन करें और पति व्रत का पालन तो अवश्य करें।

।। जिनागम में शासन देवता विधान ।।

शास्त्री परिषद, विद्वत् परिषद व आचार्य श्री विद्यासागरजी आदि को सर्वांग मान्य आचार्य भगवंत सोमदेव सूरि द्वारा रचित ग्रंथराज श्री यशःस्तिलकचम्पू महाकाव्य में शासन देवता विधान :

देवं जगत्त्रयीनेत्रं व्यन्तराद्याश्च देवताः।
समं पूजाविधानेषु पश्यनु दूरं व्रजेदधः ।। ६९७ ।।
ताः शासनाधिरक्षार्थं कल्पिताः परमागमे।
अतो यज्ञांशदानेन माननीयाः सुदृष्टिभिः ।। ६९८ ।।

अर्थ : तीनों जगत को देखने के लिये नेत्र स्वरूप अरहंत देव को तथा व्यन्तरदिक देवों को जो पूजा विधान में समान देखता है, वह बहुत दूर नीचे जाता है अर्थात् नरक का पात्र होता है। परमागम में जिनशासन की रक्षा के लिये उन शासन देवताओं की कल्पना की गई है, इसलिये सम्यग्दृष्टि जीवों के द्वारा यज्ञांश दान के द्वारा प्रतिष्ठित होने के अधिकारी हैं।

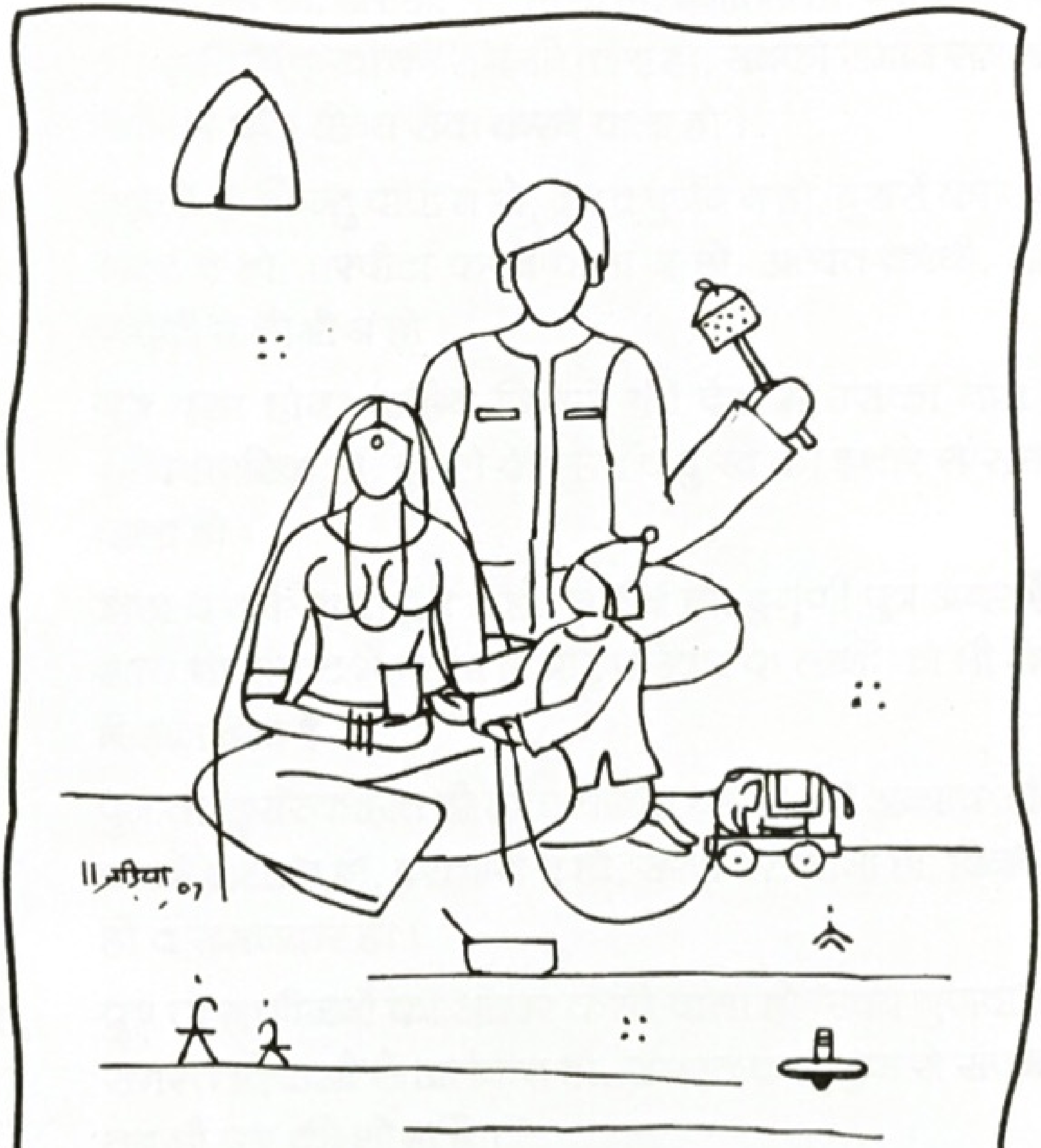

माता,पीता व पुत्र

माता, पीता व पुत्र

1. विवाह करने का फल पुत्र रत्न की प्राप्ति होना, एक भी पुत्र हो लेकिन सूर हो, वीर हो, पुण्यात्मा हो, धर्मात्मा हो, न्याय नितिमान हो, दुसरे के दुःखों को समजने वाला हो, सबको समान समजकर सब की यथा योग्य सेवा करने वाला हो ।
2. पुत्र तो हो किन्तु पापी न हो, दुष्ट व दुर्जन न हो, दुसरों को सताने वाला न हो, परपीडा करने वाला न हो, अत्यंत क्रोधी, मानी, कपटी व लोभी न हो ।
3. पुत्र एसा होना चाहिये जिससे की देश में उसका नाम हो, सुव्यवहारिक हो, दुसरों के सुख व दुःख को इशारे से समजने वाला हो ।
4. झुठा व व्यभिचारी पुत्र न हो, चोर न हो, दुर्गुणी पुत्र अगर है तो स्वयं भी संकट में पड़ता है और परिवार के लोगों को भी संकट में डाल देता है ।
5. पुत्र तो सुसंस्कारित ही होना चाहिये वह मान व अन्याय अनिति करने वाला न हो, दुराचारी न हो, सरल परीणामी हो, विनयवान हो व समजदार हो ।
6. पुत्र तो गुणीजनों का आदर करने वाला हो, स्वयं गुणवान हो, समस्त विद्याओं से अलंकृत हो, समस्त कलागुण से संपन्न हो तब ही पुत्र की शोभा है ।
7. पुत्र धर्मात्मा व धर्म की सेवा करने वाला हो, माता पिता की सेवा करने वाला हो, स्वार्थी न हो, मां बाप को सुख देने वाला हो, मां बाप की आज्ञा पालन करने वाला हो ।
8. जो पुत्र अपने मां बाप की सेवा करता है वही सच्चा पुत्र है, अपने

माता पिता को कभी दुःखी नहीं करता और उनके दुःखी होने पर दुःखी और उनके सुखी होने पर सुखी होता है, स्वप्न में भी उनको दुःख नहीं होने देता वही संसार में पुत्र सुख पाता है ।

9. जो पुत्र अपने मां बाप को सुख न पहुंचा कर दुःखी करता है वह जगत में कुपुत्र कहलाता हैं कुपुत्र को कभी मां बाप का आशिर्वाद नहीं मिलता बद्दुआएं पुत्र को दुःखी व दरीद्री बना देती है ।

10. इसलिये पुत्र को चाहिये की वह अपने मां व बाप की खुब सेवा करे, वह उनको प्रसन्न रखे, उनकी प्रसन्नता ही सुख व शांति का कारण है ।

11. मां के तो पुत्र के उपर अनेकों उपकार है जिसका ऋण पुत्र कभी नहीं चुका सकता है, सर्वप्रथम मां अपनी संतान को नौ महीना गर्भ में धारण करती है और गर्भजनीत महाकष्ट भोगती है ।

12. संतान का जब जन्म होता है, उस समय मां को महाकष्ट होता है, इतना कष्ट की मां की मृत्यु भी कभी हो सकती है, हा ! एक पुत्र को उत्पन्न करने में मां को कितना कष्ट ?

13. संतान उत्पन्न होने के बाद मां स्वयं को गिले में सुलाकर बेटे को सुके में सुलाती है, बच्चे की परीवर्ष में कोई कमी नहीं होने देती। बडी सावधानी से टट्टी पेशाबादि को साफ बिना ग्लानी पूर्वक करती है, अगर रोता है तो मां बहुत दुःखी होती है और रात भर जागकर मां अपने बच्चे को सुख पहुंचाती है, बच्चे को सुलाकर स्वयं जागती है ।

14. बेटा अगर मां बाप का ऋण चुकाने के लिये कई जन्मों तक प्रयत्न करे तो भी ऋण पुरा न होगा, मां बाप का किया हुआ उपकार बेटे को कभी नहीं भुलना चाहिये, शास्त्रकारों ने इसिलिये मां बाप को प्रथम गुरू माना है ।

15. जो मां बाप अपनी सभी सन्तानों को एक रूप देखकर सब के साथ समान व्यवहार करते हैं, उस घर में कभी लडाइ जगडे नहीं होते, तेरा मेरा नहीं होता, भेद भाव नहीं होता, गृहस्थी बिना किसी

चिन्ता के चलती है।

16. मां बाप को सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिये, सबके साथ समान व्यवहार से घर की एकता नहीं टुटती, शांतमय वातावरण रहता है और स्वर्ग के समान घर बन जाता है।

17. पिता भी अपने पुत्र को अपने ही समान समजे। कहा भी है जैसा बाप वैसा ही बेटा, पिता को अपने बेटे को अच्छा व धर्मात्मा बनाना चाहिये, ताकी संसार में बाप का नाम कमावे।

18. पिता अपने पुत्र को नाना प्रकार का व्यवसाय सीखा कर योग्य बनावे, सभी प्रकार की विद्या सिखावे और योग्य गुणवान बनावे।

19. पुत्र को पांच वर्ष की उमर तक पाले, दश वर्ष की उमर तक नाना प्रकार की शीक्षा देने के लिये उसकी ताडना करें और सोलह वर्ष की उमर के बाद पुत्र के साथ मित्रता का व्यवहार करें, क्योंकि उसकी योग्यता मित्र के समान रह जाती है समजदार बन जाता है, सोलह वर्ष की उमर के बाद उसके

उपर अनुशासन नहीं करना चाहिये, नहीं तो वह पुत्र बाप का सामना करने लगता है।

20. पुत्र भी एक प्रकार का धन ही है पिता को अच्छी तरह से शीक्षादि देकर उसको गुणवान बनाना चाहिये, क्योंकि अगर पुत्र महामुर्ख है वह बाप का नाम नहीं कमा सकता न मां बाप की सेवा ही कर शकता।

21. सिंहनी की तरह चाहे एक ही पुत्र उत्पन्न करे किन्तु गुणवान् वीर, सुर, धैर्यशाली, सज्जन, संयमी पुत्र उत्पन्न करें।

22. ज्यादा संतान उत्पन्न करने से शरीर भी क्षीण होगा, आंखों की रोशनी कमजोर होगी, अगर व्यवसाय अच्छा न होगा तो बच्चे भुखे भी मरेंगे, उनकी पडाइ लिखाइ आदि की व्यवस्था नहीं होगी और वो मुर्ख रह जायेंगे या दुष्ट व दुर्जन बन जायेंगे।

23. प्रत्येक पिता के कम से कम दो पुत्र व दो पुत्रियां होनी चाहिये, एक

पुत्र व एक पुत्री शादी कर वंश व कुल चलावे और एक पुत्र दीक्षा लेकर मुनी बने, एक पुत्री आर्यिका बनकर आत्म कल्याण करे, या देश रक्षा व पर उपकार के लिये देश को समर्पित कर दे।

24. मां का कर्त्तव्य मां को करना चाहिये, पिता का कर्त्तव्य पिता को करना चाहिये, पुत्र का कर्त्तव्य पुत्र को करना चाहिये व बेटी का कर्त्तव्य बेटी को करना चाहिये।

25. बेटी दोनों कुलों को उज्वल करती है, माता पक्ष व ससुराल पक्ष दोनों कुलों की बेटी शोभा है, बेटी को इसी प्रकार की मां बाप को शीक्षा देनी चाहिये जो दोनों कुलों को उज्वल करे।

26. अगर घर में माता पिता नहीं तो बडा भाई और मां के स्थान बडी भाभी घर का कार्यभार संभाले, सासु के कर्त्तव्य को बडी भाभी निभावे, सासु के कर्त्तव्य को भी व मां के कर्त्तव्य को भी बडी भाभी देखे। सास भी नहीं और ससुर भी नहीं तो घर का कार्यभार जेठ जेठाणी संभालें, पुरी जवाबदारी सास की व ससुर की जेठ जेठाणी संभालें।

27. जेठाणी अपने से छोटे देवर, देवराणी व नणन्द सबके साथ में यथायोग्य विनय से व्यवहार करे, उनकी व्यवस्था करे।

28. नहीं तो जो भी घर में बडा हो वो सबके साथ में समानता से योग्य व्यवहार करे, उनकी उनके योग्य व्यवस्था करे, योग्यता के अनुसार व्यवहार करने से ही सबकी शोभा है। मनुष्य का जीवन शांतता से वह धर्म से निकलता है, सभी लोग संतुष्ट रहते है।

29. बहन के घर भाइ, बेटी के घर पिता व मां और निमंत्रणरहित अतिथी को कुत्ते के समान माना है, जैसे कुत्ते की इज्जत नहीं होती है, वैसे उपरोक्त व्यक्तियों की। मतलब इनकी कोई इज्जत नहीं करता, हर समय अपमान सहन करना पडता है, अपमानीत होना पडता है।

30. जो उच्चकुलीन है उसको अपने कुल के योग्य ही व्यापार करना चाहिये, शुद्रों के व्यापर कभी नहीं करें, अच्छे अच्छे व्यापार करें,

निषिध व्यापार कभी नहीं करें।

31. वैश्य कुल में उत्पन्न होने वाला शुद्रों के व्यापार याने तेली, खटीक, चमार, सुतार, लुहार बुनकरादि के व्यापार न करें, कुम्भार का कार्य भी न करें।

कुल देवता

आचार्य विद्यासागरजी महाराज के मात्र शिक्षा-दीक्षा गुरु ही नहीं, अपितु जिनके पट्ट पर वे विराजमान हैं ऐसे आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज रचित ग्रंथ जयोदय महाकाव्य के सर्ग २, श्लोक ३९ में कहा है कि :

आत्रिकेष्टहतिहापनोद्यतः साधयेत् स्वकुलदैवताद्यतः।
हेलया हि बलवीर्यमेदुरः साधयत्यनरगोचरं सुरः॥

स्वोपज्ञ टीका : आत्रिकेति। अतः, अत्र भवमात्रिकम् आत्रिकश्च तदिष्टं तस्य हतेर्हापने उद्यतो लौकिकेप्सितक्षतिनाशतत्परः पुरुषः स्वकुलदैवतादि साधयेद् उपासनादिभिः प्रसादयेदित्यर्थः। हि यस्माद् बलश्च वीर्यश्च बलवीर्ये ताभ्यां मेदुरः पुष्टः सुरो देवो हेलयाऽनायासेन, नरणां गोचरं न भवतीति अनरगोचरमतिमानुषं कार्यं साधयति सम्पादयतीत्यर्थः।

अर्थ : लौकिक कार्यों में निर्विघ्न सफलता चाहने वाले गृहस्थ को चाहिये कि अपने कुल देवता आदि को उपासना-साधना द्वारा प्रसन्न करे, क्यों कि देवता लोग मनुष्य की अपेक्षा अधिक बल-वीर्य वाले होते हैं, जिस काम को मनुष्य नहीं कर सकता, उसे वे लीलावश कर दिखलाते हैं।

अर्थात् जब लौकिक कुल देवताओं की ही इतनी शक्ति होती है, तो शासन रक्षक देवताओं की कितनी होती होगी, क्या इसकी कल्पना सहज ही नहीं की जा सकती है ?

कुल देवताओं की पुजन का निर्देश विद्वत्जनों के मध्य महान ख्याति को प्राप्त धनंजय कवि कृत द्विसंधान महाकाव्य के सर्ग ३ के श्लोक २६ में भी है :

अर्थ मात्र : महाराज दशरथ अथवा पाण्डु ने अपने कुल देवताओं की सविधि पूजा करके राजपुत्र के ब्रह्मचर्य आश्रम का समाप्ति का संस्कार किया था। ततः अपने समान आचार, विचार, शिक्षा, दीक्षा तथा कुलीनता से युक्त स्थानपर उसका विवाह कर दिया। (साभार : कालातीत सत्य, पृष्ठ ७३-७४)

गृहस्थोपयोगी यंत्र

1. गृह क्लेश निवारण यंत्र :

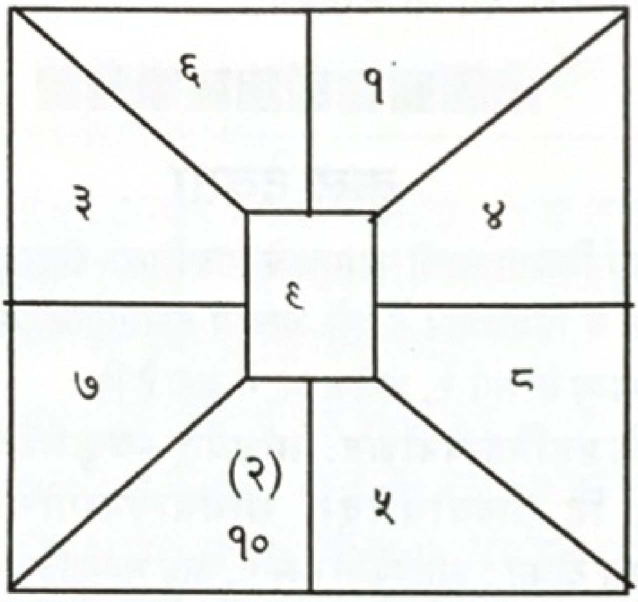

विधिः इस यंत्र को ताम्रपत्र पर खुद्वा कर गंधोदक में यंत्र का स्नान करावे, फिर इस यंत्र को भोजनालय में पानी पीने के स्थान पर लटका देवे, गृह क्लेश याने लडाइ जगडे नहीं होंगे ।

2. गर्भरक्षा यंत्र :

१६	२	१२
६	१०	१४
८	१८	४

विधी : इस यंत्र को केसर से कागज या भोज पत्र पर चमेली की कलम से लिख कर गर्भवति के गले में बांध देवे तो असमय में गर्भ नहीं गिरता, नौ मास पूर्ण होने पर यंत्र उतार लेवें ।

3. **प्रसुती की पीडा दूर हो :**

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

विधी : इस यंत्र को केसर से थाली में लिख कर धुप देवे, फिर इस यंत्र को पानी डाल कर धोकर प्रसुती महिला को पीला देवे, सुखपूर्वक प्रसुति हो जायेगी।

4. **नजर उतारने का यंत्र :**

७	६	११
१२	८	४
५	१०	९

विधी : इस यंत्र को केसर से भोज पत्र पर लिख कर ताबीज में यंत्र डाल कर गले में पहना देवे तो नजर (दृष्टि) उतर जाती है।

5. **बाल रक्षा यंत्र :**

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

विधी : इस यंत्र को केसर से भोज पत्र पर लिखकर गले में बांध देवे तो बालक की रक्षा हो जाती है।

6. **बुखार उतारने का यंत्र :**

२२	२८	२	७
६	३	२६	२५
२८	२३	८	१
४	५	२४	२७

विधी : इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से लिख कर ताबीज में डालकर गले में पहीने तो बुखार उतर जाता है।

7. भूत प्रेत हर (दूर) करना यंत्र :

३४	४२	२	७
६	३	३९	३७
४१	३५	८	१
४	५	३६	४०

विधी : इस यंत्र को घी में घोल कर मकान के अन्दर की दीवालों पर लिखे तो घर के अन्दर के भूत प्रेत, भय सब भाग जाते है ।

8. पुत्र प्राप्ति यंत्र :

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

विधी : इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिखकर गले में पहने तो पुत्र प्राप्त होता है, यंत्र ताबीज में डाल कर पहनें ।

9. विद्या प्राप्ति यंत्र :

४२	७	५६
४९	३५	२१
१४	६३	२८

विधी : इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिख कर बच्चे के गले में बांधे तो विद्या बहुत आवे, परीक्षा में पास हो ।

10. सर्वरोग निवारण यंत्र :

श्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	म	म	द्रीं
श्रीं			श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

विधी : इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर से लिखकर ताबीज में डालकर गले में पहनावे तो सर्व रोगों का निवारण होता है, यंत्र में रोगी का नाम लिखे ।

गृहस्थोपयोगी यंत्र

11. **भूत प्रेत व्यंतर बाधा निवारण यंत्र :**

८	३३४	३३४
८	३३४	३३४
८	३३४	३३४

विधी : इस यंत्र को केसर से भोजपत्र पर लिख कर ताबीज में डालकर गले में पहने तो उपर की बाधा का निवारण होता है ।

गृहस्थोपयोगी मंत्र

1. **ॐ ह्रीं नमः**

   इस मंत्र का साडा बारह हजार जाप्य करने से सर्वकार्य सिद्धि होती है ।

2. **ॐ णमो अरिहंताणं ह्रीं**

   इस मंत्र की पांच माला नित्य फेरे तो सर्व कार्य सिद्धि भी होती है और लक्ष्मी लाभ भी होता है ।

3. **ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीं नमः**

   इस मंत्र का ग्यारा माला रोज फेरने से लक्ष्मी लाभ होता है ।

4. **ॐ ह्रीं श्री क्ली ब्लूं ऐं नमः**

   इस मंत्र का नवरात्रि में डेढ सौ (150) माला फेरे, तब कार्यसिद्धि होती है ।

5. **ॐ ह्रीं श्रीं क्ली महालक्ष्म्यै नमः मम लक्ष्मी लाभं कुरू कुरू वषट्**

इस मंत्र की पांच माला रोज फेरने से लक्ष्मी लाभ होता है।

6. **ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देव्यै नमः**

इस मंत्र की पांच माला नित्य फेरने से पद्मावती देवी जप करने वालों की सब मनोकामना पूर्ण होती है।

7. **ॐ णमो आइरीयाणं ममविद्या प्राप्तिं कुरु कुरु वषट्**

इस मंत्र की 108 बार जाप्य करने से विद्या आती है पडाई में मन लगता है, मूर्ख भी विद्यावान हो जाता है।

8. **ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रूं णमो आइरीयाणं ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहुणं मम सर्व रोगोपद्रनिवारणं कुरु कुरु ठः ठः ठः**

इस मंत्र की एक माला नित्य फेरने से सर्व रोग निवारण हो जाता है।

9. नवग्रह मंत्र : **ॐ ह्रीं णमो अरिहंताण ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं णमो आइरीयाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहुणं नव ग्रहोपद्रवशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र की एक माला नित्य फेरने से नवग्रहकृत उपद्रव शांत हो जाता है।

10. णमोकार महामंत्र की एक माला नित्य फेरने से सर्व आधी, व्याधी, रोग, शोक, पीडा का निवारण होता है। चाहे उपर की बाधा हो, चाहे दुसरे का द्वारा करा-कराया हो, सब दूर होता है, व्यापार वृद्धि होती है, लक्ष्मी लाभ होता है, अंत में महा पुण्य बंध होता है, अंत में समाधिमरण होता है, मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। जैन धर्म का एक यह महामंत्र है, अनादि निधन है। इस मंत्र की महीमा का न आदि है न अंत है। सर्वकार्यों की सिद्धि करने वाला है।

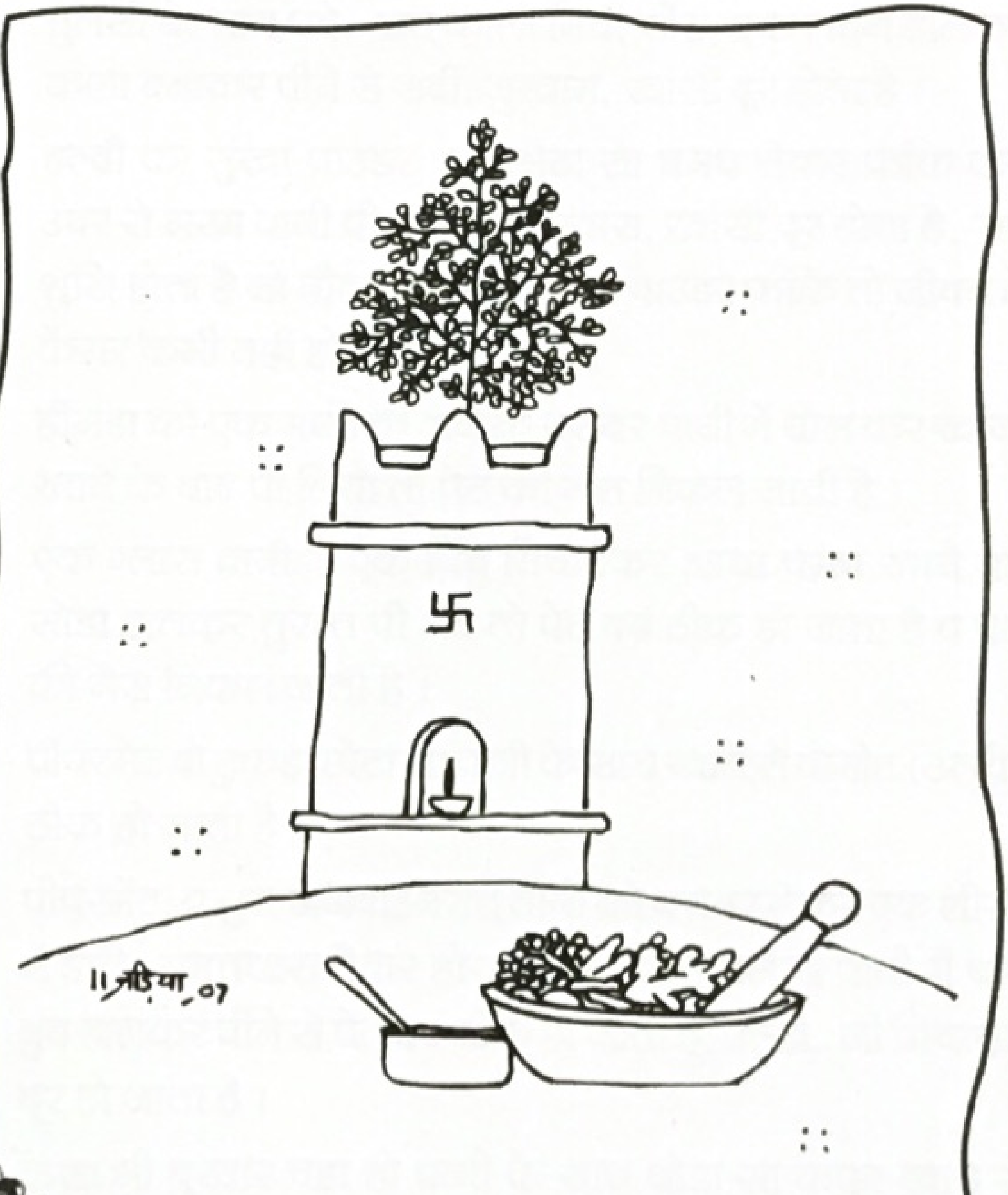

गरगुती दवाइ

गरगुती दवाइ

1. तुलसी के सात पत्ते, सात काली मिर्च, सोंठ, एक लवंग डालकर काडा बनाकर पीने से सर्दी, जुखाम, खांसी दूर होता है।
2. हल्दी का सुखा पाउडर एक छोटा सा चमच लेकर फांक कर उपर से गरम पानी पीने से दमा, स्वास, खांसी दूर होता है, रक्त शुद्धि होता है जो नीत्य नियम से हल्दी पाउडर फांके तो जीवन में केंसर कभी नहीं होता है।
3. हींगडा को एक मक्की के दाने के बराबर पानी में घोल कर खाना खाने के बाद पी लिया तो पेट की गैस निकल जाती है।
4. एक ग्लास पानी में एक निंबु निचोडकर आधा चमच खाने का सोडा डालकर तुरन्त पी लेवे तो पेट दर्द ठीक हो जाता है व पेट की गैस निकल जाती है।
5. पीपरमेंट दो टुकडा छोटा सा पानी के साथ खाने से वोमीट (उल्टी) ठीक हो जाती है।
6. पीपरमेंट, कपुर, अजवाइनसत् तीनों को बराबर लेकर एक शीसी में डाले, अमृतधारा तैयार हो जायगा, आधा गलास पानी में चार बुंद डालकर पीने से पेट दर्द ठीक हो जाता है, उल्टी, जी मिचलाइ दूर हो जाता है।
7. कैसा भी बुखार चडा हो पानी के साथ थोडा सा कपुर खाने से और कम्बल ओडकर सोने से पसीना आकर बुखार उतर जाता है।
8. थोडी सी अजवाइन को अच्छी गरमकर एक कपडे में पोटली बांधकर सुंगने से सर्दी, जुखाम दूर हो जाता है।

9. इसी अजवाइन को थोडी तवे पर सेक कर एक छोटा चमच अजवाइन सेकी हुइ लेकर थोडा नमक डालकर फांक लेवे तो पेट दर्द ठीक हो जाता है।

10. गुलाबजल को बार-बार आंखों में डालने से आंखे दुखनी बंध हो जाती है।

11. जायफल को पानी में घीस कर गाडा गाडा लेप पेट की नाभी व उसके आसपास लेप करने से ज्यादा पानी की तरह होने वाली टट्टीयां (संडास) बंध हो जाती है।

12. गरम दुध के अन्दर इसबगोल की भुसी मिलाकर खाने से बंध संडास चालु हो जाता है, कबजीयत पेट की ठीक जो जाती है।

13. इसबगोल की भुसी को दही में मिलाकर खाने से संडास जादा लगती हो तो बंध हो जाती है।

14. जायफल को घी में घीसकर आंखों की पलकों पर, भापणी पर व ललाट पर लेप करने से निन्द अच्छी आती है।

15. कच्चा जीरा को थोडा से लेकर मुंह में डाल कर दांतों से अच्छी तरह से चबावे तो कैसे भी मुंह के छाले हो दो ही दिन में आराम पड जाता है।

16. गरम गरम पानी में थोडी सी फीटकरी व नमक डालकर कुल्ला करने से दांतों का व डाड का दर्द चला जाता है, मसुडे मजबुत हो जाते हैं, हीलते दांत हीलना बंध हो जाते हैं।

17. सफेद फीटकरी को तवे पर फुलापाडकर उस फुला का चूर्ण बना लेवे, फिर केले को बीच में से चीर कर उस चूर्ण को थोडा लेकर चीरे हुवे केले में भरकर अगर महीला खावे तो उस महिला का जाने वाला सफेद पानी बंध हो जाता है, अगर लाल पानी जाता हो तो लाल फीटकरी का उपरोक्त विधि से फुलापाडकर केले में खावे तो लाल पानी जाता हुआ बंध हो जाता है।

18. एरंडी के पत्ते पर थोडा सा एरंडी का तेल लगाकर पत्तों को अग्नी

पर गरम कर पेट पर बांधे तो पेट में कहीं पर भी सुजन आकर पेट दुखता हो तो पेट दुःखना बंध हो जायगा, पेट की सुजन उतर जायेगी।

19. पांव की बीवाइ फट जाने पर कोकम का तेल गरम कर लगाने से बीवाइ भरकर दर्द खतम हो जाता है।

20. गाय के घी को थोडा सा गरम कर सोते समय चार चार बुंद दोनों नाकों में डालने से आधा सीर दर्द खतम हो जाता है।

21. सरसों के तेल की चार चार बुंद दोनों नाकों में डालने से सर्दी खतम हो जायगीऔर सीर दर्द भी ठीक हो जायेगा।

22. नित्य थोडा सा सरसों का तेल गरम कर कान में डालने से कान का दर्द, खुजली, मेलादि, खतम हो जाता है।

23. कानो में सरसों का तेल नियमीत रूप से जो डालता है उसकी आंखों की ज्योति कभी नष्ट नहीं होती है। जो सरसों के तेल का नियमित रूप से स्वयं के शरीर में मालीस करता है उसको चर्म रोग कभी नहीं होता है।

24. नमक को पानी में डालकर पानी बनावे, जिस को बिच्छु ने डंक मारा हो उस व्यक्ति को वह पानी जीधर डंक मारा हो उसके उल्टे कान में डाले तो बिच्छु का जहर उतर जाता है, हर दश मिनट में पानी कान में डालते रहे तो जहर उतर जाता है।

25. एरंडी के एक पत्ते को अच्छी तरह पीस कर दो ग्लास पानी में घोल लेवे, उस पानी को सांप के काटे हुवे व्यक्ति को पीला देवे तो सर्प का जहर उतर जाता है। हर पांच मिनट में एक पत्ता पानी में पीस कर घोलकर सर्प काटे हुवे व्यक्ति को पीलावे अवश्य जहर उतर जायेगा और व्यक्ति अच्छा हो जायेगा।

26. घी और काली मिर्च को एकत्र कर व्यक्ति को पिलाने से जहर खाने वाले का जहर उल्टी होकर निकल जाता है व्यक्ति ठीक हो जाता है।

27. नारीयल की जटा को जला कर राख बनावे। एक ग्लास मठे में डालकर पीये तो कैसा भी खुनी बवासीर (मूल व्याधि) मस्सा हो, ठीक हो जाता है किन्तु उस दिन मठा ही मठा पीवे तीन दिन तक इसी प्रकार करे, कैसा भी बवासीर हो अवश्य ठीक हो जाता है।

28. ठंडा पानी अथवा बर्फ सिर पर डालने से नाक से नीकलने वाला नकसीर ठीक होता है।

29. मयुरपंख की पिछली सफेद वाली डंडी को जला कर राख करे, उस राख को थोडी सी लेकर गुड में मिला कर गोली बनावे उस गोली को पानी के साथ खावे तो खांसी ठीक होती है।

30. लैडीं पीपल तीन को लेकर एक ग्लास पानी में उबाले उसमें थोडी सी शक्कर डाल पीवे और कम्बल ओडकर सो जावे तो पसीना आकर बुखार उतर जायेगा।

31. नीर्मली को पानी में घीस कर आंखों में आंजे तो आंखे निर्मल रहती है, रोग नहीं होता।

32. तीन रास्ते की मिट्टी, सात नमक की डली, सात लाल मिर्च, थोडी सरसों व महिला के सिर के बाल, इन सबको लेकर 21 बार व्यक्ति के उपर उतार कर अग्नि में डाले तो व्यक्ति की नजर उतर जाती है।

33. व्यक्ति जो जो पदार्थ खाता है उन सबको थोडा थोडा एक लोटे में लेकर पानी डालकर अग्नी पर गरम करे फिर इन पदार्थो को व्यक्ति के ऊपर 21 बार उतार कर एक थाली में उल्टे करे तो अवश्य नजर निकल जाती है।

34. पके हुवे टमाटर को उबाल कर जुस बनाकर नित्य पीने से रक्त शुद्धि हो जाती है।

35. एरंडी के तेल को थोडे गरम पानी में डाल कर दो तीन दीन पीने से पेट की कब्जयत दूर हो जाती है।

36. गरम गरम दुध में एक चमच घी डाल कर व्यक्ति पीवे तो पेट की

गरमी शांत होती है और साधारण पेट की कब्झयत भी दूर हो जाती है।

37. बादाम पांच छह लेकर पानी मे रात को डालकर रखें। प्रातः बादामों का उपर का छीलका निकाल कर पत्थर पर घीसे और गरम दुध में मिलाकर बच्चे को पीलावे तो बच्चे की बुद्धि अच्छी हो जाती है, दिमाग तेज हो जाता है, याददास्त बड जाती है।

38. थोडा सा काला नमक और थोडी सी अजवाइन पीस कर गरम पानी के साथ फांके तो पेट की गैस निकल जाती है। गैस के रोगी को यह दवाइ रोज लेनी चाहिये, जिससे पाचन शक्ति भी बड़ती है और पेट दुखना मिटता है। पेट का अफारा दूर होता है।

39. आधा दुध आधा ठंडा पानी मिलाकर पीने से एसीडीटी (अम्लपीत) शांत हो जाता है। नारीयल का पानी खुब पीने से भी एसीडीटी दूर हो जाती है।

40. मुलतानी मिट्टी को दो ग्लास पानी में रात को डाल कर गला लेवे प्रातः जब मोटी मोटी तो नीचे बैठ जायेगी उपर का पानी एक बरतन में अलग से निकालकर थोडी सी उसमें शक्कर डाल कर पीवे तो महिला का अति रक्तस्त्राव बंध हो जाता है, मासिक धर्म में होने वाला अतिरक्त स्त्राव बंध हो जाता है।

41. कलमी सोडा को थोडा सा पानी में डालकर नाभी के नीचे उस पानी को लगावे तो बंध पेसाब खुलकर आता है।

42. पलास के फुल का भी पानी पेडुवोंपर (नाभी के नीचे) लगाने से पेसाब खुल कर आता है।

43. नागोरी अश्वगंध का चूर्ण डेड चमच गरम दूध में डाल थोडी शक्कर डाले और पीवे तो वीर्य गाडा होकर स्वप्नदोष नहीं होता और भी अनेक वीर्य दोष मिट जाते हैं, पुरूषत्व में कोई दोष हो तो भी मिट जाता है।

44. नागकेशर के चूर्ण को थोडा सा घी में छ मासा चूर्ण डाल कर महिला चाटे तो महिला में संतान उत्पन्न करने की शक्ति उत्पन्न

हो जाती है।

45. इमली को पानी में अच्छी तरह से भीगोकर पानी डालक पना बनावे, उसमें थोडा सा गुड या शक्कर मिलावे, उसको पीवे तो गरमी में लु कभी नहीं लगती और लु लग भी गई तो ठीक हो जाती है।

46. जिसको लु लगी हो, उसको जमीन पर सुला दे, उसके बाद एक कपडे को ठंडे पानी में भीगोकर लु लगने वाले व्यक्ति पर सिर से पांव तक शरीर को स्पर्श करते हुवे उतारे तो लु खत्म हो जाती है।

47. कच्ची केरी को अच्छी तरह भुनकर उस का रस निकाले उस रस में थोडा सा गुड या शक्कर मिला कर पीवे तो लु समाप्त हो जाती है।

48. शरीर में पीती उच्छल जाने पर शरीर में कंडे की राख लगाकर कम्बल ओड कर सोने से पीती ठीक हो जाती है।

49. पच्चीस ग्राम चारोली को खाने से भी पीती ठीक हो जाती है।

50. शरीर के किसी अंग में खुजली हो गई हो खाज हो गया हो तो दीपसेलीक ट्युब लगाने से खाज खुजली ठीक हो जाती है, यहां तक की एगजीमा भी नियमित लगाने से ठीक होता है।

51. वट वृक्ष के दुध की सात आठ बुंदे शक्कर में डाल कर खाने से पुरूष का वीर्य संतान पैदा करने योग्य बन जाता है, पुरूष के वीर्य कीटाणु की कमी पूरी हो जाती है।

52. कैसी भी उल्टी हो रही है उसको पांच सात पत्ते पोदीना के चबाकर खाने से उल्टी बंद हो जाती है किन्तु दीन में चार पांच बार पांच सात पत्ते चबाना चाहिये।

गुरू उपासना

गुरू उपासना

1. गुरू सद्‌गुरू हो, सद्‌गुरू ही संसारी जीव का कल्याण कर सकता, गुरू स्वयं तीरता है और संसारी जीव को भी तारता है ।
2. सद्‌गुरू लकडी की नाव तरह होता है, जैसे लकडी की नौका पानी पर तैर कर उसमें बैठने वालों को भी जल से तैरा देती है, इस पार से उस पार तक ले जाती है ।
3. उसी तरह सद्‌गुरू भी संसारी जीव को भव समुद्र पार करा देता है, सद्‌गुरू पत्थर की नौका के समान नहीं होता जो स्वयं डुबता है और उसमें बैठने वालों को भी डुबा देता है ।
4. पत्थर की नाव तो कभी जल पर तैरती ही नहीं, वह तो जल में डुब जाती है क्योंकि पत्थर में तैराने के गुण ही नहीं, डुबाने के ही गुण हैं, जो भी उस पर बैठा वह डुब जाता है ।
5. गुरू चार प्रकार के होते हैं, प्रथम माता-पिता, दुसरा गृहस्थाचार्य पंडित, तीसरा विद्यागुरू, चौथा दीक्षा गुरू ।
6. माता-पिता अपनी संतान को सुयोग्य शिक्षा देकर सुयोग्य बनाते हैं, अच्छी शिक्षा देते हैं, मेरी संतान अच्छी बने एसी शिक्षा देते हैं, इसलिये माता-पिता को प्रथम गुरू माना है ।
7. कोई भी माता-पिता अपनी संतान को पापी निकृष्ट या दुष्ट नहीं बनाना चाहता, सभी लोग अपनी संतान को सज्जन व अच्छी बनाना चाहते हैं, देशभक्त बने, धर्म की व माता पिता की सेवा करे, एसा ही चाहते हैं, इसलिये अच्छी ही शिक्षा देते हैं ।
8. द्वितीय गुरू जन्म के बाद अडतालीसदीन होने पर मंदीरादि में ले जाते हैं, उस समय वहां रहने वाला पंडित है, जो बालक को कान में मंत्र सुनाकर संस्कार करता है ।
9. तीसरा गुरू गुरूकुल, विद्यालय, स्कुलों में विद्या दान करने वाला

पडाने वाला गुरू होता है।

10. चौथा गुरू धर्मगुरू होता है, जो शिक्षा दीक्षा देकर धर्म मार्ग में लगाता है, मोक्ष मार्ग में लगाता है, इसमें शुरू के तीन तो मात्र गुरू हैं, चौथा यथार्थ गुरू है।

11. चौथे नम्बर का गुरू भी अगर महाव्रती है, तो ही सद्‌गुरू, अगर महाव्रती नहीं है तो वो भी मात्र गुरू। सच्चे मोक्ष मार्ग पर तो मात्र सद्‌गुरू ही लगा सकता है अन्य नहीं।

12. सद्‌गुरू के लक्षण एसे हैं :- जो संपूर्ण विषय आशा से रहित, किसी प्रकार का आरंभ नहीं करता हो, चोबीस प्रकार के परीग्रह से रहित हो, ज्ञान ध्यान तप से सहित हो वो सद्‌गुरू कहलाता है।

13. सद्‌गुरू ही सच्चा रास्ता दिखाता है, संसार सुख का भी और मोक्ष सुख का भी, आत्मशांति का भी, आत्मशांति ही सच्चा सुख है, अन्तिम तो भव्य जीव को इसी शांति का प्रयास करना है तब ही कर्म बंधनों से छुटकर निराकुल आत्मशांति याने मोक्ष मीलेगा।

14. सद्‌गुरू पंचमहाव्रत, पांचसमीती, पांच इन्द्रिय निरोध, षड्आवश्यक, सात विशेष गुण, एसे अठाइस मूल गुणों का पालन करते हैं, जो बावीसपरीषह को सहन करते हैं और तेरा प्रकार के चरित्र को पालन करते हैं, वे ही सद्‌गुरू कहलाते हैं।

15. जो निर्ग्रंथ नग्न अंदर बाहर विकारों से रहित हैं, बालकवत् निर्विकार निर्भय हैं, स्व कल्याण के साथ पर कल्याण करने वाले हैं वे ही सद्‌गुरू हो सकते हैं।

16. इस प्रकार का लक्षण जिसमें हैं वो ही सद्‌गुरू कहलाते हैं, सद्‌गुरू की भक्ती, उपासना, पूजा, दान आदि करना चाहिये।

17. सद्‌गुरू की भक्ती करने से सुन्दर रूप मिलता है नमस्कार करने से उच्चगोत्र की प्राप्ति होती हे, दान देने से भोगोपभोग सामग्री की प्राप्ति होती है, उनकी उपासना करने से स्वयं की भी पूजा होती है, स्तवन करने से यशकीर्ति की प्राप्ति होती है।

18. किन्तु होना चाहिये सद्‌गुरू, जो सद्‌गुरू को आहार दान,

औषधदान, शास्त्रदान, अभयदान अपनी शक्ती अनुसार करता है, उस को परंपरा से मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

19. दाता के सप्त गुणों से सहित होकर नवदा भक्तीपूर्वक सद्गुरू को जो आहार (भोजन) कराता है वह नीयम से स्वर्ग में जाता है या उत्तम भोग भुमि या मध्यम भोग भूमि या जगन्य भोग भूमी में उत्पन्न होकर वहां के सुख भोगता है ।

20. भोग भूमी में मात्र सुख ही सुख है दुःख नाम की कोई वस्तु ही नहीं है भोग भूमि में दश प्रकार के कल्पवृक्ष रहते हैं, भोग भूमि में रहने वाला जीव इन वृक्षों के नीचे जाकर भोजनादि मांगते हैं और वो वृक्ष उनको जो चाहिये वह सब पदार्थ दे देते हैं ।

21. भोग भूमि में उत्पन्न होने वाला जीव भोग भूमि से मरकर नियम से पहले व दुसरे स्वर्ग में ही उत्पन्न होता है, दुसरी तीर्यंचादि गतियों में उत्पन्न नहीं होता है, परंपरा से अच्छी अच्छी गतियों में उत्पन्न होकर वहां के सुख भोगकर नियम से मोक्ष जाता है ।

22. इसलिये प्रत्येक श्रावक अपने घर में शुद्ध भोजन बनाकर सद्गुरू को भोजन करावे, आहार देवे, नियम है की उत्तम भूमि में डाला हुआ बीज उत्तम ही फल देता है, कभी भी नीरर्थक (बेकार) नहीं जाता ।

23. श्रावक को अपने लिये ही भोजन बनाना चाहिये साधुओं के लिये नहीं, अगर साधुओं के लिये भोजन बनाया तो साधु नहीं खा सकता, क्योंकि भोजन बनाने में अनेक आरंभ होता है, अग्नी जलाना, पानी भरना, खांडना, कुटनादि ये सब करने से जीव घात होता है और जीव घात हुवा तो पाप होगा, इसलिये साधु के लिये भोजन नहीं बनाना ।

24. साधु को भी अपने लिये बनाया हुआ भोजन नहीं खाना चाहिये अगर ये मालुम पड गया कि श्रावक ने मेरे लिये भोजन बनाया है तो साधु वहां भोजन न करे ।

25. जानकर भी की मेरे लिये श्रावक ने भोजन बनाया है, तो भी साधु ने वहां भोजन किया तो उस साधु को पाप लगेगा और श्रावक को

भी, साधु आरंभ में कृत, कारित, अनुमोदना नहीं करता।

26. सद्गुरू का चर्या महान है, सच्चे मोक्ष मार्गी हैं, पाप भीरू हैं, पाप करने से डरते हैं, एसे सद्गुरू की भक्ती करें, सतसंगती करें, भोजनादि देवे, उपकरणादि देवे, उनकी सच्ची भक्ती करें।

।। श्री क्षेत्र कुंथुगिरी स्थित कलिकुण्ड पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य ।।

श्री कुंथुगिरी के हृदय कमल जो श्यामवर्ण प्रभु राजित हैं।
उन कलिकुण्ड श्री पार्श्वनाथ को महाअर्घ्य यह अर्पित है।।
स्वीकारो-स्वीकारो मेरा अर्घ्य देव तुम स्वीकारो !
मुझ जिन श्रद्धानी को भी अपनी नौका में ले तारो।।

।। ॐ ह्रीं श्री कुंथुगिरी क्षेत्र स्थित कलिकुणड पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राताय महाअर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।।

।। पंच क्षेत्रपाल बाबा का अर्घ ।।

क्षेत्रपाल तुम क्षेत्र के स्वामी रक्षक अरु प्रतिपालक हो।
जिनवानी की शरण ग्रहण करने वालों के तारक हो।
अनुकूलता धर्म मार्ग में अर्थ काम सह तुम देते।
प्रतिफल की कांक्षा से रहित तुम बदले में कुछ ना लेते।
नौ देवों में जिन आलय में गर्भित तेरा मान हमें।
उसी मान वश भाव सहित अर्पित करते यह अर्घ्य तुम्हें।
स्वीकारो-स्वीकारो मेरा अर्घ्य देव तुम स्वीकारो !
मुझ जिन श्रद्धानी को भी अपनी नौका में ले तारो।।

मंत्र : ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र वीरभद्र मणिभद्र भैरवापराजित पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।।

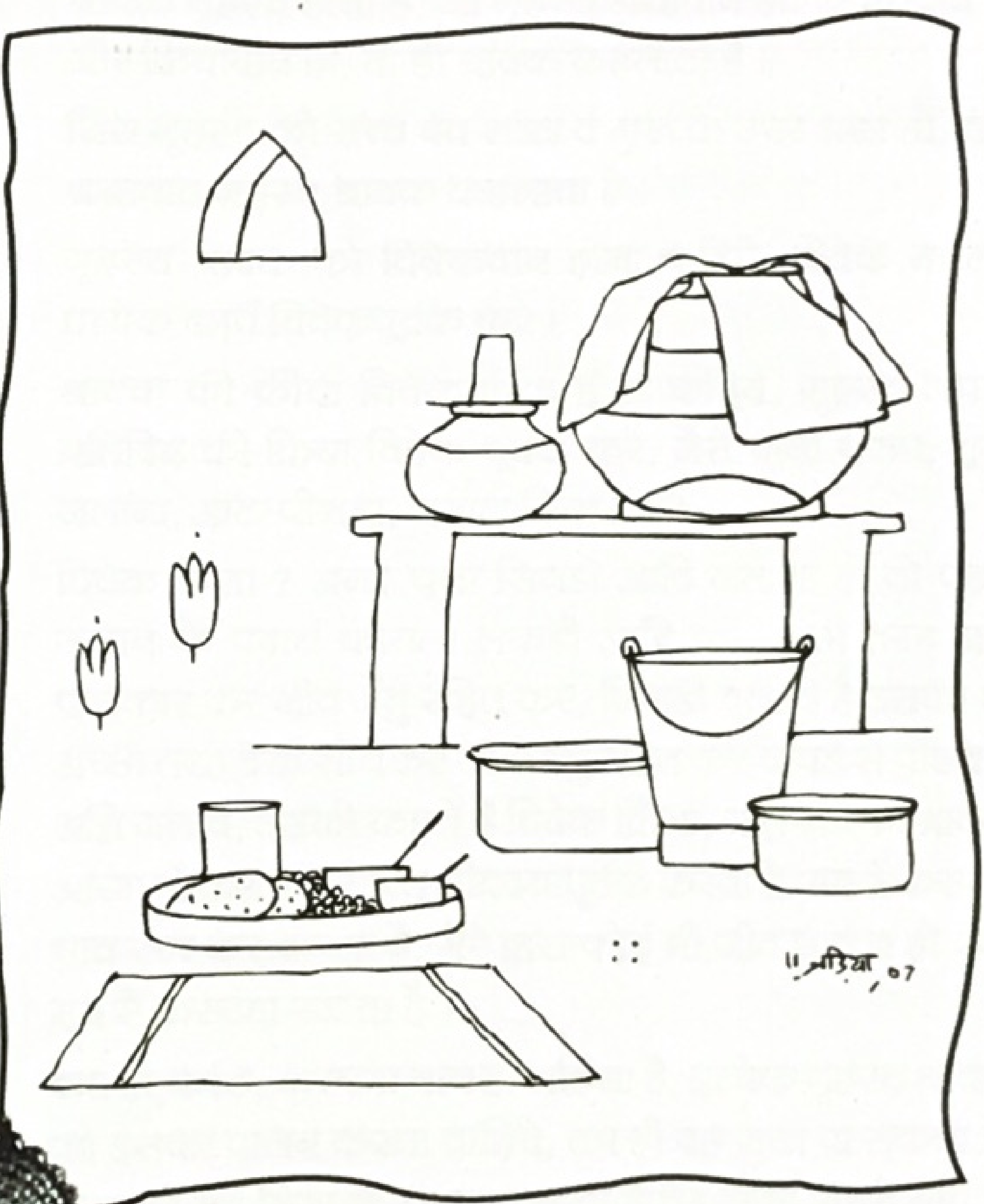

गृहस्थ का पानी व भोजन

गृहस्थ का पानी व भोजन

1. श्रावक गृहस्थ होता है, जो गृहस्थ श्रद्धावान हो, विवेकवान हो और क्रियावान हो, वो ही श्रावक कहलाता है।
2. जिस गृहस्थ को सच्चे देव शास्त्र व गुरू के उपर श्रद्धा हो, वही श्रद्धावान गृहस्थ श्रावक कहलाता है।
3. गृहस्थ श्रावक को विवेकवान होना चाहिये, विवेक मतलब प्रत्येक कार्य विवेकपूर्वक करे।
4. श्रावक की क्रीया विवेकपूर्वक होना चाहिये, गृहस्थ अपनी प्रतिदिन की क्रिया विवेक पूर्वक करे, जैसे पानी भरना, चूला जलाना, आटा पीसना, मसालादि कुटना।
5. विवेक कैसा ? अगर चूला सिगडी आदि जलाना हो तो पहले जलाने के पदार्थ कोयला लकडी आदि को अच्छी तरह जाड फटकार कर जीव जंतु रहित करे, सिगडी चूलादि है उसको भी अच्छी तरह देख सोधकर जीव जंतु रहित कर कपडे से पोंछकर अग्नि जलावे, इसको कहते हैं विवेक क्रिया, माने विवेकी श्रावक आरंभ तो करता है किन्तु जीवदयापूर्वक करता है, मन में करूणा भाव रख कर करता है, मेरे द्वारा कोई भी जीव घात न हो एसी मन में करूणा रखता है।
6. दया ही धर्म है, करूणा भाव ही अहिंसा है, प्रत्येक गृहस्थ श्रावक को इसका पालन करना चाहिये, तब ही वह सुख पा सकता है, जो दुसरे की हिंसा कर सुख चाहता है वह कभी सुखी नहीं हो सकता है इसलिये श्रावक को विवेकपूर्वक क्रिया करना चाहिये।
7. गृहस्थ कैसे पानी का उपयोग करे ? पानी शुद्ध हो, कुए या बावडी या बोर, हेडपंप, नदी, जरना या बहुत बडा जलाशय, नहर

का हो अथवा नल का हो।

8. गृहस्थ श्रावक को पानी छानने की क्रिया अवश्य मालुम होना चाहिये अगर गृहस्थ पानी का उपयोग नहीं जानता है तो वह श्रावक कहलाने का अधिकारी नहीं हैं।

9. गृहस्थ श्रावक पानी को सर्व प्रथम अच्छी तरह से छाने, छत्तीस अंगुल लंबा चोडा मोटा कपडा लेवे। शास्त्र की आज्ञा है की जिस कपडे में सूर्य की किरणे भी न दिखे एसा मोटा सफेद कपडा लेवे, उसको भी डबल करे, घडे के मुंह पर लगावे।

10. प्रथम बाल्टी से पानी लेवे उसके बाद कपडा लगा हुवा घडा में थोडा पानी डाले छने हुवे कपडे से बर्तन को धोकर फिर उसी कपडे को लगावे बर्तन के मुंह पर फिर उसमें बाल्टी का पानी डाले, बर्तन पानी से भर जाने के बाद धीरे से बर्तन पर लगा हुआ कपडा उठावे।

11. उठाकर उस कपडे को बाल्टी में उल्टा कर छना हुआ पानी उस कपडे पर डाले उससे कपडे पर लगे हुवे जीव जन्तु बाल्टी के पानी में मिल जायेंगे, बाल्टी का जीवानी सहित पानी यथा स्थान वापस पहुंचा देवे, यह हुई पानी छानने की विधि।

12. उपरोक्त विधि के अनुसार ही पानी छान कर गृहस्थ श्रावक को पीना चाहिये, अनछना पानी श्रावक कभी भी न पीवे।

13. अनछना पानी पीने से अनेक प्रकार के जीव जंतु पीने वाले के पेट में चले जायेंगे और शरीर रोगों से ग्रसीत हो जायगा, जीव भी मर जायेंगे। जीव मर जाने से हिंसा का दोष भी लगेगा, हिसा हुई तो पाप लगेगा, पाप से कभी सुख नहीं मिलता।

14. वर्तमान में बहुत से लोग घरों के नलों में कपडे की थेली बांध देते हैं और पानी छन गया मानते हैं और उस पानी को छना मान कर पीते रहते हैं चोबीसों घंटों तक।

15. किन्तु एसा नहीं, नल के उपर कपडा न बांध कर बर्तन के मुंह पर कपडा लगाकर पानी छाने फिर ही उस पानी को अपने उपयोग

में लेवे।

16. पानी छानने के बाद वह पानी सेंतालीस मिनट तक जीव जन्तु से रहित रहता है, फिर वापस वह पानी अनछना हो जाता है, सेंतालीस मिनट के बाद छने हुवे पानी में वापस जीव उत्पन्न हो जाते हैं।

17. गृहस्थ श्रावक छने हुवे पानी को सेंतालीस मिनट के अन्दर ही गरम कर लेवे, अगर थोडा गरम पानी हुआ है तो उस पानी की छह घंटे की मर्यादा, उससे ज्यादा गरम किया है तो बारह घंटे की मर्यादा, पानी में अगर तीन उबाल आ गया तो चोबीस घंटे की मर्यादा हो जाती है।

18. छह घंटे वाली मर्यादा का पानी, बारह घंटे वाली मर्यादा का पानी, अथवा चौबीस घंटे वाली मर्यादा का पानी ही गृहस्थ या साधु उपयोग में लेवे।

19. अनछना पानी का कभी भी उपयोग न करें गृहस्थ श्रावक पानी छानने के बाद तुरन्त ही उस पानी को गरम करके प्रासुक कर फिर अपने उपयोग में लेवें।

20. पानी छानने का कपडा सफेद, हो मोटा हो, रंगीन न हो, फटा हुवा न हो, पुराना कपडा न हो, धोती, कुर्ता, गागरा, ब्लाउज आदि का कपडा नहीं हो,गंदा कपडा न हो, एक स्वछ कपडे से पानी छाने, जीवानी जीस स्थान का पानी है वहीं पर विवेक पूर्वक डाले तब ही वह श्रावक कहलाने का अधिकारी है।

21. भारतीय संस्कृति के सभी धर्मों में पानी छान कर पीने की विधि बताइ है। जैन धर्म में तो और भी बहुत कुछ जादा विधि बताइ, यहां मैं संक्षेप में लिख रहा हुँ।

22. गृहस्थ श्रावक अपने घर का काम विवेकपूर्वक करें जैसे धान्य की पिसाइ, कुटाइ अथवा मसालादि की पीसाइ या कुटाइ करना हो तो प्रथम गेहुं धान्यादि को सर्वप्रथम अच्छी तरह देखे, सीले गुने न हो, उसमें कीडे वगेरेह जीव न हो, गुना हुवा धान्य का

त्याग करे, उसको न वापरे, न कुटे, न पीसे।

23. सीला हुवा धान्य को खाने से जीव घात होगा, और मांस खाने का दोष लगेगा, धान्य में जीतने जीव होंगे वो सब मर जायेंगे, असंखात जीवों का घात होगा, इस प्रकार का सीला याने सडा हुआ धान्य खाने से बुद्धि भी भ्रष्ट हो जायेगी और शरीर में रोग भी हो जायेगा।

24. गृहस्थ सर्वप्रथम सडा हुवा धान्य का त्याग कर गेहुं चनादि को अच्छी तरह से देखे, सोधे, कंकर, पत्थर, कचरादि सब निकाल देवे, फिर धान्य को छने हुवे पानी से धोकर सुखावे, फिर सावधानी से कुटे पीसे और फिर खाने के उपयोग में लेवे।

25. गृहस्थ श्रावक को होटलादि में बने हुवे पदार्थ कभी नहीं खाना चाहिये, बाजार का कुटा हुआ मसाला, आटा पीसा हुआ भी नहीं खाना चाहिये, क्योंकि बाजार की चीज को, चाहे आटा हो चाहे मसाला हो चाहे इनसे बने हुवे मेदेके पदार्थ हो कभी नहीं अपने खाने के उपयोग में लेवे।

26. होटलादिक के बने हुवे भोजनादिक महा अशुद्ध होते हैं, बनाने वाले भी शुद्रादिक लोग होते हैं, बिना छना पानी, बिना देखे, बिना सोधे पदार्थ का उपयोग कर सामान बनाते हैं, डबल रोटी, बीस कुट, मिठाइ, नमकीन, रोटी, दाल, चांवल, सब्जी आदि महाअशुद्ध होते हैं इसलिये ऐसे अशुद्ध पदार्थ कभी नहीं खावें।

27. गृहस्थ श्रावक अपने ही घर में शुद्धता से भोजनादि बना कर खावे, बाजार से तैयार भोजन भी अपने घर में लाकर न खावे, न परिवार के लोगों को खाने देवे यही विवेकपूर्वक क्रिया है।

34. गृहस्थ श्रावक को अपने घर को झाडना, पोंछनादि करना हो तो सर्वप्रथम जमीन या दीवाल या कोई भी पदार्थ को देखे की कोई चीटी आदि जीव तो नहीं है, अगर जीव है तो उन जीवों को महीन वस्त्र से दूर करे, फिर जाडे, पोंछे, अगर जमीन को या दिवाल को झाडना है तो कोमल झाड़ु से जीवों को बचाकर उनकी रक्षा करते

हुए झाडे पोंछे।

35. सच्चा श्रावक विवेकपूर्वक क्रिया करने वाला होता है, उसी को शांति मिलती है, महापुण्यबंध होता है, ये क्रियाएं चाहे धार्मिक हो चाहे सांसारिक।

36. गृहस्थ श्रावक धर्मात्मा होता है, विवेकपूर्वक क्रिया करने वाला होता है, कभी भी अविवेक पूर्वक क्रीया नहीं करता ऐसे गृहस्थ को ही धर्म का फल मिलता है, पुण्य का फल मिलता है, परंपरा से मोक्ष जाता हैं

37. श्रावक धार्मिक क्रिया भी विवेकपूर्वक करता है, मंदिर व गुरू के दर्शन के लिये जाता है तो चार हाथ प्रमाण जमीन को देखते हुवे चलता है कारण पांव के नीचे कोइ जीव न मर जाय एसी सावधानी रख कर चलता है।

38. चाहे साधु हो या श्रावक हो सब के लिये जीव हिंसा न हो एसी क्षण क्षण सावधानी रखना चाहिये, इससे बडा धर्म कोई भी नहीं है, दया ही धर्म का मूल है।

39. गृहस्थ श्रावक मंदिर में जाकर जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक व पूजा भी करता है तो विवेक पूर्वक करता है, अगर अभिषेक भी करना है तो जल, दुग्धादि पदार्थ शुद्ध लेकर प्रासुक करके जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक करता है।

40. सर्वप्रथम अभिषेक के बरतन, अभिषेक का स्थान व जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति को एक महीन कपडे से साफ करें, फिर अभिषेक की विधि से भगवान का अभिषेक करें।

41. भगवान का अभिषेक पूर्ण सावधानीपूर्वक करे अशुद्धद्रव्यों से न करे, जैसे बाजार का दुध, दही, घी आदि, पानी भी शोले के कपड़ों से भर कर अभिषेक करें, दुध को निकाल कर तुरन्त गरम कर काम में लेवें, अभिषेक के लिये जादा गरम गरम दुध भगवान के उपर न डालें।

42. भगवान का अभिषेक होते ही भगवान को पुनः शुद्ध पानी से

साफ कर महीन कपडे से भगवान का अंग पोछन अच्छी तरह से करें, कहीं पर भी पानी नहीं रहना चाहिये।

43. भगवान का गंधोदक कहीं शुद्ध जगह पर पेड की जड में विसर्जन करें, एक बर्तन में गंधोदक अलग से लेकर जनता को लगाने के लिये रखे किन्तु उसको ढाक कर रखे ताकी उसमें कोई मक्खी आदि पडकर न मरे।

44. भगवान को चडाने आदि के जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धुप, फल वगेरे भी है उनको अच्छी तरह देखे सोधे, जीव जन्तु रहित करे नैवेद्य आदि हैं, उनको शुद्धता पूर्वक बनाकर विवेक पूर्वक चडावें, दीपक को लालटेन हांडी से ढक कर रखें, याने कोई जीव का घात न हो उसका पुरा ध्यान रखें।

45. चावल को प्रथम शोध कर शुद्ध जल से धो कर अक्षत बनावें, फिर चडावें, बिना शोधन कर न धोवे, नहीं तो उसमें रहने वाली इली आदि कीडे मर जायेंगे और पाप लगेगा।

46. पुष्प गुलाब, मोगरा, चंपा-चमेली आदि को चडाने का आगम में पूर्णरीत्या लिखा हुवा है, सो अवश्य चडावे, पुष्प की कली न चडावे, शुद्रादिक के द्वारा लाया हुआ न चडावे, सडा, गला, कीडा खाया हुवा न चडावे, पुष्प को तोडते समय वहां ही पुष्प को झाड लेवे, फिर धोकर भगवान को पुष्प चडावे।

47. फल सेव, मोसमी, संतरा, केला, आम, सुपारी, बादाम, नारीयलादि अनेक फल चडाने का शास्त्र में लिखा हुआ है, किन्तु फल भी ताजा हो, मिष्ट, मधुर, सुगन्धित, सुन्दर होना चाहिये, एसे ही फलों को जिनेन्द्र देव के सामने चडाने चाहिये, फलों को चडाते समय पुरा ध्यान रखें की फल सडे गले, दुर्गन्धीत, कूरूप न हो।

48. श्रावक अष्ट द्रव्य से पूजा करे, अवश्य करे, किन्तु पूजा कर एसा का एसा पूजा के द्रव्य को न छोडे, ढांक कर रखे, फिर मंदीर में जो भी उस द्रव्य को लेता है उसे शीघ्र लेने के लिये कहें, उठवा

देवे, नहीं तो उसमें जीव पड जायेंगे या बदबु आने लगेगी।

49. इसी प्रकार अनेक तरह की विवेक पूर्वक क्रिया करें, विवेकपूर्वक क्रिया करने से ही स्व कल्याण पर कल्याण होता है, धर्म के फल का मात्र एक ही रास्ता है, एसा करने से ही धर्म का फल मिलता है, गृहस्थ चलते, फिरते, बोलते, खाते, पिते संसारीक क्रिया करते हुवे भी विवेक रखे।

50. गृहस्थ श्रावक प्रतिदिन षट्कर्म करें, देव पूजा, गुरूपास्ती, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये षट्कर्म हैं, इन षट्कर्मों का पालन प्रत्येक गृहस्थ को अवश्य करना चाहिये, वही सच्चा गृहस्थ श्रावक कहलाता है, यही श्रावक धर्म है, यही गृहस्थ धर्म है।

51. गृहस्थ श्रावक को ज्ञान प्राप्त करने के लिये स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये, श्रावकाचार का स्वाध्याय करे याने पडे, प्रथमानुयोग ग्रंथो का पठन करे जिससे गृहस्थ श्रावकोपयोगी ज्ञान बड जावे और क्रियाओं के अन्दर विवेक आवे।

52. स्वाध्याय भी विवेकपूर्वक करे, खाते खाते, झुठे मुंह, लेटरिंग की अशुद्धि, उल्टी हुई हो तो अथवा और भी कोई अशुद्धि हो तो, शास्त्र न पडे, शास्त्र को एक उंचे स्थान पर विराजमान कर शास्त्र की पडाइ करे, स्वाध्याय करे।

53. महापुराणादि या रामचरित्र या हरीवंश पुराणादि शास्त्रों को पडे, महापुरूषों के, महासती महिलाओं के चरित्र को पडे, प्रथमानुयोग शास्त्रों का व श्रावकाचार का पडना श्रावक को परम आवश्यक है।

54. गृहस्थ श्रावक को अपनी शक्तीनुसार संयम पालन अवश्य करना चाहिये, संयम याने खाने में संयम, बोलने में संयम, पीने में संयम, चलने में संयम, बैठने में संयम उठने में संयम भोगों में संयम आदि, प्रत्येक पाप क्रियाओं में संयम का पालन करे, संयम याने मर्यादा।

55. गृहस्थ श्रावक को अपनी शक्ति के अनुसार तपस्या अवश्य करना चाहिये, अष्टमी चतुर्दशी रविवार, एकादशी, पंचमी, आदि तीथीयों

में या वारों में एकासन करना, उपवास करना, नीर्जल उपवास करना, षट्रसों का त्याग करना, भुख से कम खाना, पर्वो में भी उपवासादि करना तप है।

56. तप करने से कर्म समाप्त होते हैं, अशुभ कर्मों की समाप्ति होती है, तप करने से शरीर भी हलका व निरोग रहता है और पुण्य बंध भी होता है, स्वर्गादिक की प्राप्ती होती है।

57. गृहस्थ श्रावक को कइ प्रकार का दान करना चाहिये, सद्गुरू को आहार दान, औषधदान, शास्त्र दान, अभयदान देना चाहिये, ये दान उत्तम मध्यम जघन्य पात्र को देना चाहिये।

58. अपने पुत्र के बडे हो जाने पर, योग्य हो जाने पर उसको उत्तराधिकारी बना कर अपने लिये कुछ संपत्ती रखकर सबकी सब संपत्ती पुत्र को दे देवे। इसको संपत्ती दान कहते हैं।

59. अपनी पुत्री विवाह योग्य हो गई हो तो योग्यवर देखकर उसके साथ विवाह के समय कन्या दान व धन धान्य सुवर्णादि रूपया पैसा देना कन्या दान कहलाता है।

60. गृहस्थ श्रावक की दयनीयदशा अशुभकर्म के उदय से हो गई हो, दरीद्री हो गया हो, निर्धन हो गया हो, बेघर हो गया हो, परिवार रहित हो गया हो तो उसको धनादि देकर सहायता करना जगन्य पात्र दान कहलाता है।

61. अपने जाती धर्म का न होने पर भी अगर उसके ऊपर किसी प्रकार का संकट आ गया हो या निर्धन हो गया हो, तो उसको सहायता कर देना दयादति दान है।

62. दयादति दान में निर्धन को धन देना, निर्वस्त्र को वस्त्र दान करना, भूखे को रोटी देना, बेघर को घर बनाकर देना, रोगी है तो औषध (दवाइ) देना, प्राण संकट में है तो उसके प्राणों की रक्षा करना, पाठ्य पुस्तकों का दान गरीबों को करना दयादति दान है।

63. दयादति दान तो अवश्य करे, किन्तु व्यसन से सम्पन्न कोइ भी व्यसनी को रूपया दान न करें, नहीं तो तुम्हारे पैसे का दुरुपयोग

करेगा, व्यसन में और भी ज्यादा पड जायेगा और स्वयं को बरबादी की ओर ले जायगा और तुम्हारा भी नुकसान होगा। पैसा देने वाले की भी दुर्गति होगी।

64. जुआ खेलना, मांस खाना, शराब पीना, शिकार खेलना, चोरी करना, परस्त्री सेवन करना, वेश्या सेवन करना, ये सात व्यसन हैं, इन सातों व्यसनों में कोई एक भी व्यसन व्यक्ति के जीवन में हो सकता है और सातों भी हो सकते हैं।

65. तुमने व्यसनी को पैसा दिया और उसने तुम्हारा पैसा लेकर शराब पिया अथवा मांस खाया, अथवा परस्त्री सेवन किया, या वैश्या सेवन किया या जुआ खेला तो पाप तुमको भी लगा, क्योंकि तुम्हारे पैसे से उसने मांस खाया था, अन्य कोइ पाप किया इस लिये तुम्हे भी पाप लगेगा।

66. गृहस्थ श्रावक अपनी संपत्ति अगर पाप करने में लगती है तो कभी दान न करें, क्योंकि सामने वाले ने तुम्हारे पैसे से पाप किया है, इसलिये पैसे देने वाले को भी पाप लगेगा, पाप तो पाप है दाता को भी नहीं छोडेगा।

67. पाप प्रवृति कृत रूप हो, कारित हो या अनुमोदना रूप हो तीनों पाप है, याने स्वयं करना, दुसरे से कराना, या कोई पाप कर रहा हो तो अनुमोदना करना के आप अच्छा कर रहे हो या मन में प्रसन्नता धारण करना पाप प्रवृति है।

68. गृहस्थ श्रावक को दान तो अवश्य करना है, किन्तु किसको दान करना यह पुर्ण ध्यान रखना है। अपात्र या कुपात्र को कभी संपत्ति नहीं देना, रूपया नहीं देना, इतना ध्यान अवश्य रखना है की ये मेरे से पेसे लेकर कहीं पाप तो नहीं करेगा। पात्र कुपात्र का अवश्य ध्यान रखें।

69. अगर तुमने कुपात्र को दान दिया तो तुम्हारी दुर्गति होगी, कुपात्र दान करने वाला कुभोग भुमि में जन्मता है, कुभोग भुमि में जन्म लेने वाले जीव पशु के आकार के मनुष्य व मनुष्यनी होते हैं,

हाथी, घोडा, बैल आदि के समान मनुष्य होते हैं ।

70. इसलिये कुपात्र दान कभी नहीं करना, उनको अगर दान भी करना है तो भोजन, वस्त्र, मकानादि देना, देते समय जो भी व्यसन पात्र के जीवन में है उस का त्याग करवा कर देना ताकी तुम्हारे पैसे का दुरुपयोग न हो, पाप में पैसा न लगे ।

71. गृहस्थ श्रावक को भी पाप से डरना चाहिये, तुम्हारे घर में अगर कोई शस्त्र हो, तलवार, बंदुक, छुरी, धन, कुदाली, फावडादि हो, तो भी किसी को न देवे, नहीं तो उन शस्त्रों से वो जो कर्म करेगा, उस कर्म से हुई हिंसा का पाप आपको भी लगेगा । शास्त्र में तो अग्निदान का भी निषेध लिखा है ।

72. भावों में सदा दया रखे, अहिंसा भाव रखे, किसी का बुरा न सोचे, सदा पर उपकार की भावना रखें, मेरे द्वारा कभी किसिका अहित न हो ऐसा विचार रखे, अपने से बडों का विनय रखे, अपने से गुणवान है उन पर प्रेम भाव रखे प्रत्येक जीव के प्रति सेवा भाव रखे ।

73. कभी किसी को कठोर वचन न बोले, मर्मभेदी वचन न बोले, इर्ष्या रूप वचन, द्वेष रूप वचन, परनिन्दा रूप वचन न बोले न सुने, गुणवानों की साधु संतों की व गुरूजनों की निन्दा कभी नहीं सुनना, नहीं तो सुनने वाला भी पापी है ।

74. गृहस्थ श्रावक को नित्य ही धर्म भाव, पर उपकार के भाव, सत्यभाषण, सत्य होने पर भी अगर किसी का मन दुःखे तो सत्य न बोले, हमारे सत्य बोलने पर अगर किसी जीव का जीव घात हो रहा हो तो वहां सत्य न बोले, या तो मौन रहे या फिर असत्य बोले, गृहस्थ श्रावक का यही सत्यव्रत है ।

75. किसी जीव के मर जाने पर ही हिंसा होती है ऐसा नहीं, तुमने पाप के भाव भी बनाये और पाप न कर पाये तो भी तुमको पाप लगेगा क्योंकि भाव हिंसा प्रधान है, भाव पाप प्रधान है, मुख्यता भावों की है ।

76. इसलिये हमेसा अपने भाव उज्वल रखें, भावों में पंच पाप रूप भाव नहीं आना चाहिये, भावों में पापों के प्रति अति आशक्ती भाव है तो वह महापापी है, एसा भी देखा जाता है उपर से धर्मात्मा है और अन्दर मन खराब है तो उसको धर्मका फल न मिल कर पाप का ही फल मिलेगा।

77. गृहस्थ श्रावक अपने परिवार, धन सम्पत्ति आदि के प्रति ज्यादा आशक्ती न रखे, मोह न रखे, अपनी जवाबदारी समज कर कार्य करे, ज्यादा आशक्ती दुर्गति का कारण है।

78. गृहस्थ श्रावक अपने परिणाम धर्ममयी रखते हुवे गृहस्थ धर्मपालन करे और मन में यह विचार रखे की इन सबको मुजे छोडना है, मेरा कुछ भी नहीं है, जन्मा तो अकेला, मरूंगा तो अकेला, सब स्वार्थ के साथी हैं, कोई किसी का नहीं है, चार दिन का इनके साथ मेरा रहना है, जैसा आया वैसा ही मुजे जाना है।

79. गृहस्थ श्रावक को प्रतिदिन बारह भावनाओं का चिंतन करना चाहिये, जिससे भावों की शुद्धि बनी रहे, और संसार का स्वरूप ज्ञान में रहे, वस्तु स्वरूप क्या है सब मालुम पडे।

80. गृहस्थ श्रावक को प्रतिदिन मोह कम हो वैसी भावना बनाना चाहिये, मोह जीव का शत्रु है, आत्मा का विनाश करता है, दुर्गति में जीव को पहुंचा देता है, यह सब समजकर मोह कम करें, तब आकुलता रहित शांति प्राप्त होगी।

81. प्रत्येक गृहस्थ को अपना अन्तिम समय का पुरा ध्यान रखना चाहिये जिसका अन्तिम ठीक है, उस का सब कुछ ठीक है, जिसका अन्तिम बिगडा, उसका सब कुछ बिगड गया, पुरा जीवन ही खराब हो गया।

82. हमारा जीवन खराब न हो धर्म का फल नष्ट न हो ऐसा ही सतत प्रयत्न करना चाहिये श्रावक को, नहीं तो पुरी मेहनत बेकार जायगी, मेहनत का कोई फल नहीं मिलेगा, मनुष्य जीवन निष्फल हो जायगा, पुनः मनुष्य जन्म मिलना कठिन हो जायगा।

83. गृहस्थ धर्म का पूर्णतः पालन करने क बाद श्रावक धर्म का पालन करें श्रावक धर्म का पालन कर अन्तिम सलेखना धारण कर सुमरण करना, सुमरण ही सद्गति का कारण है, जिसने जीवन भर धर्म का पालन किया और अन्तिम मरण अच्छा नहीं हुआ तो वह श्रावक दुर्गति में चला जायगा।

84. एक बार कुमरण कर अगर जीव कुगति में चला गया तो वापस मनुष्य जन्म मिलना बहुत कठिन है, जैसे समुद्र के अन्दर पडा हुवा सरसों का दाना, इसलिये अपने सुमरण का अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

85. सलेखना धारण करने का समय अगर दुर्भीक्ष पड गया हो, शरीर सिथिल पड गया हो, इन्द्रिया कार्य नहीं करती, कोई मरणान्तक उपद्रव आ गया हो या अत्यन्त बुढापा आ गया हो, या शरीर में कोई महारोग उत्पन्न हो गया हो तो धर्म बुद्धि धारक जीव समाधि मरण धारण करे।

86. **समआधि व्याधिइति समाधि,** साधु हो या श्रावक सभी धर्मात्माओं को समाधि धारण अवश्य करना चाहिये, जो जीव समाधि धारण कर मरता है उसकी कभी भी दुर्गति नही होती, धर्म का फल ही समाधि है, समाधि माने धर्मध्यान के भावों से सहित होकर मरना।

87. अच्छे परिणामों से मरना सलेखना याने समाधी है, जैसे भगवान की पूजा के भावों से मरना, गुरूओं के दान देने में भाव कर मरना, शास्त्र पडते मरना, संसार शरीर भोगों से विरक्त होकर संयम भाव पूर्वक मरना, तप त्याग, अपरीग्रहभावों से मरना ही समाधि है।

88. जो गृहस्थ या साधु उत्कृष्ट रूप से दिगम्बर नग्न होकर समाधि करता है वह जीव दो तीन भवों में ही मोक्ष जाता है और जगन्य रूप भावों से समाधि करता है वह सात आठ भवों में मोक्ष चला जाता है।

89. प्रत्येक गृहस्थ या साधु को अपना लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का ही होना

चाहिये, अनन्त सुख की प्राप्ति होती है जो सुख कभी नष्ट नहीं होगा, अनन्तकाल तक रहेगा, आत्मा सिद्ध स्वरूप बन जायगा।

90. प्रत्येक गृहस्थ या मुनि साधु को आत्म कल्याण का ही पुरूषार्थ करना चाहिये, यही पुरूषार्थ सच्चा पुरूषार्थ है, बाकी सब तो संसार में घुमने का ही पुरूषार्थ है, इसीलिये संसार भ्रमण का पुरूषार्थ न कर मोक्ष पुरूषार्थ करना चाहिये।

91. गृहस्थाश्रम, ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थआश्रम, और साधुआश्रम (सन्यासाश्रम) ये आश्रमों का वर्णन हिन्दु ग्रंथो में भी मिलता है, सर्वप्रथम गृहस्थाश्रम का पालन करे, उसके बाद ब्रह्मचारी बन कर रहे, फिर साधु बन कर साधना करे, अन्तिम में ईश्वर में लीन होने के लिये सन्यास धारण करे।

92. ये सब बातें मोही गृहस्थी या मोही साधु को नहीं मिलती, जहां मोह होता है वहीं जीव पैदा होता है और वहीं वहीं जन्ममरण धारण करता है और जन्म मरण के दुःखों को उठाता है।

।। माँ पद्मावती का अर्घ ।।

कलिकाल में माँ पद्मासम और न कोई हितकारी।
देवशास्त्रगुरु के अनंतर एक मात्र ये उपकारी।
इनका अर्चन पूजन वंदन अनुकूलता देता है।
मिथ्यामत में रमते मन को सम्यक् पथ में खेता है।।

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्यायै पद्मावत्यै महादेव्यै इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा।।

भारतीय नारी

भारतीय नारी

1. भारतीय नारी शीलवान, धर्मात्मा, वीर, बहादुर, मां का रूप होती है, भारतीय नारी का सबसे बडा गुण शीलवान है, कीसी भी परस्थिति में धर्मात्मा नारी अपने शील को नहीं बेचती है, शील में दोष नहीं आने देती, चाहे समय पर प्राण दे देगी, किन्तु अपना शरीर नहीं देगी।
2. अपना संयम भी वैसा ही रखेगी जिससे उसके शील में दोष नहीं आवे, अपना खान-पान, वस्त्र-आभुषण, चाल-चलन, रहन-सहन निर्दोष रखेगी, जिससे शील में दोष न आवे।
3. भारतीय नारी की जब तक शादी नहीं होती तब तक कुमारी, शादी हो जाने के बाद सौभाग्यवती, पति के मरने के बाद ब्रह्मचारिणी विधवा होती है, नारी के कई रूप हैं।
4. सर्वप्रथम बालिका, फिर युवति, फिर प्रोढा और अंत में वृद्धा, ये रूप नारी के हैं, बालिका जब होती है तब माता पिता के आश्रय से पलती है, उसके बाद युवति दशा में नाना प्रकार की विद्या प्राप्त कर संसार चलाने के योग्य बन जाती है, शील संयम क्या है, अशील क्या है समजने लगती है।
5. माता-पिता जब अपनी पुत्री को विवाह के योग्य समजने लगते हैं तब अपनी पुत्री का योग्य वर के साथ गुण, उत्तम जाती, कुल, वंश परंपरा देखकर अग्नि साक्षीपूर्वक विवाह कर देते हैं।
6. भारतीय नारी का विवाह होने के बाद वह सौभाग्य वती पत्नी हो जाती है, पत्नी होने के बाद उस नारी पर एक संसार चलाने की बहुत बडी जवाबदारी पड जाती है, सुयोग्य शिक्षा जिसने प्राप्त की है अगर एसी नारी है तो वह अपने पति के परिवार का सुयोग्य रीति से संचालन कर घर को स्वर्ग बना देती है।

7. अपना पति का घर केसे सुयोग्य रीति से संचालन करना चाहिये एसी कला उसमें होनी चाहिए, प्रत्येक माता-पिता को अपनी पुत्री को वे सारी शिक्षा देना चाहिये जो पति का घर सम्भाल लेवे ।

8. महिला की शादी होने के बाद वह जिससे शादी हुई वह उसकी धर्मपत्नी हो गइ, धर्मपत्नी या उस घर के समस्त धर्म को निभाने वाली, पति के साथ पत्नी का धर्म निभावे, सास-ससुर के साथ बहु का धर्म निभावे, जेठाणी के साथ देराणी का और देराणी के साथ जेठाणी का धर्म निभावे ।

9. स्वयं के पुत्र पुत्रियों के लिये मां का धर्म निभावे, उनको सुशिक्षा देने के लिये गुरू का धर्म निभावे, पोता पोतीओं के लिये दादी का धर्म निभावे ।

10. महिला जब अपनी पति को सुमंत्रणा देवे तब वह अपने पति की मंत्री है, अपने पति को भोजन देवे तब मां के समान है, अपने पति की सेवा करे तब दासी के समान है, जब पति के साथ रमण करे तब वह पत्नी है ।

11. नारी के अनेक रूप धर्माचार्यो ने लिखे है, संसार में अनेक नारीओं ने सुशिला होने से प्रसिद्धि पाइ है, उनकी देवताओं ने सेवा की, शीलधर्म पर जब संकट आया तब देवताओं ने उनकी रक्षा की है अपने शीलव्रत में दृढ रहने पर ।

12. सीता, अंजना, अनन्तमति मैनासुन्दरी, रैनमंजुषा, अनुसुयादि नारीयां ही थी जिनका सुवर्णन वेद पुराणों व कथा साहित्यकारों ने किया है । संसार में जिनका वर्णन व प्रसिद्धि है लोग उनसे शिक्षा लेते हैं, अच्छे उदाहरणों में उनका उदाहरण देते हैं ।

13. इसलिये नारीयां कितनी पुज्य है लिखा है :

नारी नारी मत कहो नारी नर की खान,
नारी से उत्पन्न हुवे तीर्थंकर भगवान् ।

नारी तो महापुरूषों की जननी है, अगर नारी नहीं होती तो राम, कृष्ण, बुद्ध, पेगम्बर, इषा, नारायण बलभद्र, तीर्थंकर, चक्रवर्ति,

साधुसंत आदि नहीं होते। देशभक्त, नेता, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आदि जो देशवासीओं की अच्छी संभाल करते हैं, ये सब नारी के ही उपकार हैं।

14. भारतीय नारीओं का कितना महत्वपूर्ण स्थान है यह जगतप्रसिद्ध है, इसलिये नारीओं को थोडी सी कोई भूल कर अपना महत्व कभी कम नहीं करना चाहिये।

15 नारीयों को अपने से छोटे पुरूष को पुत्र समजना चाहिये, अपने से बराबर को भाई समजना चाहिये, अपने से बडे पुरूष को पिता समजना चाहिये, इसी प्रकार सद्नारीओं को पुरूष के साथ व्यवहार करना चाहिये।

16. नारीओं को पर पुरूष पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये, उसके साथ एकान्त सेवन कभी नहीं करना चाहिये, भाइ-पिता को छोडकर कभी भी किसी पुरूष के साथ एकान्त में न बैठे।

17. अकेला पुरुष और अकेली स्त्री एकान्त में न बैठे न उठे, न सोवे, एक दुसरे के परीणाम खराब होने की संभावना रहती है, एकान्त सेवन से शील संयम खराब हो सकता है।

18. स्त्री और पुरुष यदि एकान्त में रहते हैं तो दोनों की भावना पवित्र नहीं रह सकती, भावनाओं में विकार आये बिना नहीं रहता, इसलिये चाहे कोई कितना भी नजदीक रीस्ते वाला क्यों न हो, कम से कम दो के बीच तीसरा एक कोई अवश्य हो।

19. दो स्त्री व एक पुरूष हो या, दो पुरूष व एक स्त्री हो, अकेले अकेले दो कभी न रहे, तीसरा कोई न कोई अवश्य हो, स्त्री तो अकेले पुरूष के साथ कभी न रहे नहीं तो वह पुरूष अकेली महिला को देख कर अपने भाव खराब करेगा ही करेगा, और महिला अपना स्वयं का शील खो बैठेगी।

20. उसमें भी युवक व युवती को तो अकेले अकेले रहना ही नहीं चाहिये, युवा वर्ग को तो पुरा का पुरा सावधान रहना, नहीं तो उनका चारित्र ठीक नहीं रह सकता, अगर विषय कषायवस चरित्र

नष्ट हो गया याने शील नष्ट हो गया तो सब कुछ गया, उसका जीव निर्गन्ध पुष्प के समान है ।

21. नारीओं को पचास वर्ष की उमर तक सावधानी रखना चाहिये, उमर ढलने तक सावधान रहे, ये विषय न बालक को देखते, न युवा को देखते, न प्रोढा को देखते, न वृद्ध को देखते, थोडी सी असावधानी हुई की विषय हावी हुवे नहीं और चारित्र नष्ट हुआ नहीं ।

22. जिसका धन नष्ट हो गया तो कुछ भी नष्ट नहीं हुवा, जिसको रोग हो गया तो समजो थोडा नष्ट हो गया और जिसका चरित्र नष्ट हो गया उसका सब कुछ नष्ट हो गया । सब कुछ धन संपत्ती नष्ट होने के बाद पुनः प्राप्त हो सकती है । शरीर में रोग हो गया तो दवाइ खाने से रोग नष्ट हो जायेगा, लेकिन चरित्र, शील नष्ट हो गया तो सब कुछ नष्ट हो जायगा, जीवन में दाग लग कर रह जायेगा ।

23. महिला को अगर जीवन में एक बार भी दुराचार रूप दाग लग गया तो वह पुरा जीवन समाज में मुंह उठाकर नहीं चल सकती, लोग भी उसको बुरी नजर से देखते हैं, उसकी समाज में कोई इज्जत नहीं रहती और स्वयं भी स्वयं के अन्दर जीवन भर दुःखी रहती है ।

24. महिला का तो जीवन बेदाग ही होना चाहिये, सफेद कपडे पर लगा दाग सब को दिखाइ देता है, महिला का जीवन तो सफेद कपडे की तरह है, भुलकर भी उस पर दाग नहीं लगावें, लग गया तो पश्चाताप ही मात्र करना पडता है ।

25. भारतीय नारी का खान पान भी इन्द्रिय उत्तेजित करने वाला नहीं होना चाहिये, खान-पिन का प्रभाव शरीर पर पडता है, फिर शरीर बेकाबु हो जाता है, अगर इन्द्रियां बेकाबु हो गई तो जीवन में अनेक उपद्रव हो जाते हैं और बहुत से लोगों का तो जीवन ही नष्ट हो जाता है ।

26. देश में जितनी भी महान् नारीयां हुइ हैं, उनकी गाथा आज भी इतिहास गाता है और अन्य नारीआं शक्ती के अनुसार उनका अनुकरण कर

रही है व करती रहेगी, प्रत्येक नारी को अपनी लाज बचाने के लिये, देश की रक्षा के लिये, अपने शील संयम की रक्षा के लिये यदि प्राणों का भी बलीदान देना पडे तो दे देना चाहिये।

27. इतिहास साक्षी है चित्तोड की रानी पद्मनी ने अपनी शील की रक्षा के लिये अग्नि में कुद कर प्राण दे दिये, राजस्थान की हाडा रानी ने अपना शिर काट कर दे दिया, लेकिन अपनी आन बान शान शील मुसलमानों के हाथ में नहीं जाने दिया यही भारतीय नारी का स्वाभीमान है, गौरव है।

28. हे मेरी माता बहनों ! आज की फैशन परस्ती में फंस कर अपनी लाज शर्म मत गंवावो, अपने आंगोपांग ढक कर रखो, आंगोपांगों को खोल कर घुमना बुद्धिमानी का काम नहीं है, अच्छे कुल की नारीओं के लक्षण नहीं है, आंगोपांग खोलकर तो बेशर्म नारीयां घुमती है।

29. जिस नारी ने अपनी लाज शर्म छोड दी और बेशर्म हो आंगोपांग खोलकर बजारों में घुमने लगी वह तो सद्नारी कहलाने की अधिकारी नहीं रही। न उसका शील संयम रह सकता, ऐसे नारी कहीं पर भी आपत्ती में फंस जाती है और बलात्कार की शिकार हो जाती है।

30. संसार में दुर्जनों की कोई कमी नहीं है फिर अगर नारीओं ने उनका साथ दे दिया तो कार्य बिगडेगा ही बिगडेगा, या तो नारी स्वयं फंस जायेगी, या दुष्ट लोग उसे फसा लेंगे और हो जायगा दुष्कृत्य। फिर जीवन भर पश्चाताप की अग्नि में जलते रहो।

31. नारीओं को अपना सादा जीवन उच्च विचार रखना चाहिये, शीलवान रहना चाहिये, चारित्रवान रहना चाहिये, धर्मात्मा रहना चाहिये, सद्गृहणी रहना चाहिये, साधुसंतों की सेवक रहना चाहिये, स्वाध्याय शील रहना चाहिये, सदाचारी रहना चाहिये, गुणवान रहकर धर्म अर्थ काम का सेवन कर मोक्ष मार्ग पर लगना चाहिये।

प्रशस्ती :

वि. संवत 2063 श्रावण शुक्ला 3 गुरूवार ता. 16-8-2007 प्रातः 7 बजे से 8 बजे सिंह लग्न में समाप्त किया जन कल्याण के लिये, सर्व मानवजन इसको पडकर जीवन सफल बनाओ, इसका विषय धर्म अर्थ काम त्रीवर्ग का पालन कर गृहस्थ को मोक्ष मार्ग में लगाना है, यह ग्रंथ दुःख रूपी ताला को खोलने के लिये चाबी के समान है, इसको पडने के बाद अपनी जीवन चर्या ठीक करो, धर्म का मार्ग पकडो ऐसा मेरा आशिर्वाद हैं।

लेखक :

आचार्य महावीर कीर्तिजी का शिष्य

गणाधिपति गणधराचार्य कुन्थुसागर

कुन्थुगिरी क्षेत्र

जि. कोल्हापुर

(महाराष्ट्र)

टिप्पणी/स्मृति हेतु सुरक्षित

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

परिचय चित्रावली

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

अल्प काल में पूर्ण योजनायें

त्रिभुवन चूडामणी कलिकुंड चिंतामणि पार्श्वनाथ मन्दिर

वर्तमान में जिनालय शृंखला में प्रमुख कलिकुंड पार्श्वनाथ जिनालय का निर्माण हो चुका है जिसमें कलिकुंड यंत्र पर ९ फुटी ऊँची पार्श्वनाथ स्वामी की भव्य मनोज्ञ पद्मासन प्रतिमा दर्शकोंका मन मोहती है ।

इसी मन्दिर में श्री जी के दोनो तरफ भव्य विशाल धरणेंन्द्र देव एवं महदेवी पद्मावती माता की महान अतिशय कारी, मनवांछित फल प्रदान करनेवाली ५ फूट ऊँची प्रतिमा विराजित है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

सहस्त्रकूट जिनालय

अष्टकोनी शिखर बध्द सहस्त्रकूट जिनालय में१००८ पीतल की जिन प्रतिमाएँ विराजमान की गयी है । यह सहस्त्रकूट जिनालय कोटीभट श्रीपाल चरित्र के आधार पर निर्माण किया गया है ।

इस मन्दिर में श्रीपाल मैनासुन्दरी का सचित्र शिलापट भी निर्मित किये गये है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

गुरु मन्दिर

गुरु मन्दिर में गुरुणाम गुरु आचार्य श्री महावीरकीर्तिजी महाराज की प्रतिमा विराजमान की गयी है ।इसी मन्दिर में २०० से अधिक दुर्लभ रत्न प्रतिमाएँ स्थापित की गयी है । जो दर्शकों के मन को मोह लेती हैं।

इसके अतिरिक्त इसी मन्दिर में गौतम स्वामी, उमास्वामी, कुन्दकुन्द से लगाकर वर्तमान २० वी सदी तक से ४० आचार्यों की प्रतिमाएँ यहाँ विराजमान की गयी है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

आगम मन्दिर

आगम मन्दिर एक अभूतपूर्व रचना है । इस मन्दिर में द्वादशांग स्वरूप श्रुतस्कंध की रचना, केवलज्ञान पट की स्थापना, एवं सरस्वती देवी की भव्य सुन्दर मुर्ती की स्थापना की गयी है ।

ग्रंथ भंडार

यहाँ गुरुदेव द्वारा चालीस वर्षों का संकलित एक दुर्लभ प्राचिन शास्त्र भंडार है । जिसमें लगभग १०,००० ग्रंथों को विराजमान किया गया है।

समाधि ध्यान मन्दिर

साधु जीवन का अन्तिम ध्येय समाधिमरण है । इस मार्गपर सल्लेखना रत समाधिस्त साधुओं के लिए एक समाधि ध्यान मन्दिर का निर्माण किया गया है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

शान्तिनाथ मन्दिर

चिन्तामणि कलिकुंड पार्श्वनाथ मन्दिर के दाहिनी ओर जगको शान्ति प्रदान करने वाले शान्तिनाथ भगवान जी का मन्दिर निर्मित किया गया है ।

आचार्य महावीरकीर्ति सभा मंडप

क्षेत्र पर आयोजित धर्म प्रभावनापूर्ण कार्यक्रमों के सम्पन्न करने हेतू १०० बाय १५० का एक भव्य विशाल सुन्दर सभा मंडप का निर्माण किया गया है । इस सभामंडपमें एक साथ ५,००० श्रध्दलुजन बैठकर कार्यक्रम का आनन्द ले सकते है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

मुनिसुव्रतनाथ जिनालय

मूल मन्दिर के सामने बाये हाथपर शनिग्रह अरिष्ट निवारक मुनिसुव्रतनाथ भगवान का लघु आकार का भव्य मन्दिर बनाया गया है ।

आचार्य विमलसागर भवन

श्री क्षेत्र कुन्थुगिरी पर रत्नत्रयाराधना में संलग्न एवं आगन्तुक आचार्य संघो की आवास व्यवस्था हेतु, ज्ञान-ध्यान में कारणभूत आचार्य विमलसागर भवन का निर्माण किया गया है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

क्षेत्रपाल मन्दिर

क्षेत्रपाल देव के लिए एक पृथक मन्दिर श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ भगवान के समक्ष नीचे के प्रांगण में मानस्तंभ के सामने दायीं ओर निर्माण किया गया है। यहाँ के क्षेत्रपाल जागृत है । अमावस्या के दिन क्षेत्रपाल की मान्यता के लिये यहाँ श्रध्दालुजन भारी मात्रा में उपस्थित होकर यहाँ नारियल फोडकर अपनी मिन्नत पूरी करते है ।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

मानस्तभ

चिन्तामणी कलिकुंड पार्श्वनाथ मन्दिर के सामने उत्तुंग मानस्तंभ बनाया गया है, जिसमें १६ विद्या देवियों एवं २४ तिर्थंकर के शासन रक्षक यक्षिणियों की निर्मिती की गयी है।

कीर्तिस्तंभ

क्षेत्र पर प्रवेश करते ही क्षेत्र के इतिहास को उल्लेखित करनेवाला एवं महावीर के सन्देश को देनेवाला, कार्यालय के सामने भव्य कीर्तिस्तंभ का निर्माण किया किया गया है।

कुन्थुगिरि अतिशय क्षेत्र

Shree Kshetra Kunthugiri
श्री क्षेत्र कुंथुगि